www.thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 22 दिसम्बर 2013 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 22 दिसम्बर 2013 से 28 दिसम्बर 2013

पेज कृ.-05 ● वि० सं०-2070 ● वर्ष 78, अंक 87, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 190 ● सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,114 ● इस अंक का मूल्य - 2.00 रुपये

नागबनी, जम्मू में उमड़ा आर्यों का सैलाब

श्रीनगर में भी होगा आर्य समाज का झण्डा बुलंद

14 दिसम्बर, 2013 को महाराजा हरिसिंह एग्रीकल्चरल स्कूल, नागबनी में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा एवं आर्य युवा समाज, जम्मू-कश्मीर के तत्त्वावधान में एक विशाल यज्ञ-महोत्सव (आओ संसार सुखी बनाएं) का आयोजन किया गया जिसमें देशभर से लगभग दस हजार की संख्या में आए आर्यजनों ने अपनी हाजिरी दर्ज की। आयोजन के मुख्य अतिथि आर्य शिरोमणि श्री पूनम सूरी जी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, नई दिल्ली ने अपने उद्बोधन में आर्य समाज के महत्त्व को रेखांकित करते हुए आज के प्रदूषित एवं विषाक्त वातावरण में नकारात्मक प्रवृत्तियों को पराजित कर समाज और राष्ट्र को उन्नति की ओर ले जाने का आह्वान किया। संसार को सुखी बनाने के लिए उन्होंने ऋषि दयानन्द के द्वारा दर्शाये मार्ग पर चलते हुए संध्या, स्वाध्याय, सत्संग और सेवा को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी और कहा कि नकारात्मक प्रवृत्तियों का सामना करने के लिए आर्य समाज एक ऐसा मंच है जहाँ से हमें श्रेष्ठ बनने का संदेश और उत्साह मिलता है। जम्मू-कश्मीर की उपसभा और युवा समाज को इस विशाल आयोजन पर बधाई देते हुए मुख्य अतिथि ने जोरदार शब्दों में कहा कि जिस प्रकार जम्मू में सारे देश से आर्यजन इकट्ठे हुए है, इसी प्रकार यदि ईश्वर ने चाहा तो अगले वर्ष श्रीनगर में आर्य समाज का झंडा बुलंद करेंगे जहाँ से प्रत्येक व्यक्ति को अपने मज़हब में रहते हुए श्रेष्ठ इंसान बनने का संदेश दिया जाएगा।

इस अवसर पर 201 कुण्डीय यज्ञ महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें आर्य शिरोमणि श्री पूनम सूरी जी ने सपत्नीक मुख्य यजमान की भूमिका निभाई। इस यज्ञ में डी.ए.वी. कॉलेज कमेटी के समस्त पदाधिकारियों सहित दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र, राजस्थान, बिहार जैसे दूरस्थ स्थानों से आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभाओं के प्रधान, मंत्री एवं विभिन्न राज्यों के क्षेत्रीय निदेशक, कॉलेजों, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूलों तथा अन्य व्यावसायिक संस्थानों के प्राचार्य, अध्यापक/प्राध्यापक बड़ी संख्या में उपस्थित थे। इस यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. प्रमोद योगार्थी, प्राचार्य, दयानन्द ब्रह्म विद्यालय, हिसार ने अपने ब्रह्मचारियों सहित वेदमंत्रों का पाठ कर वातावरण को वैदिक बना दिया। इस अवसर के लिए नागबनी स्कूल के 400 छात्र-छात्राओं को यज्ञ प्रक्रिया में विशेष प्रशिक्षण दिया गया था।

मंचीय कार्यक्रम में प्रादेशिक उपसभा एवं आर्य युवा समाज, जम्मू-कश्मीर की ओर से मुख्य अतिथि के हाथों से राज्य के मूर्धन्य आर्य संन्यासियों और विद्वानों को मानपत्र व शॉल भेंट कर सम्मानित किया गया। जम्मू की प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों और विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों को भी सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि ने भी संन्यासियों से आर्शीवाद ग्रहण किया। मुख्य अतिथि के अतिरिक्त श्री जे.पी. शूर (निदेशक), तथा प्रिंसिपल श्री आलोक बेताब ने सभा को सम्बोधित किया। श्रीमती पूर्ण प्रभा शर्मा (निदेशिका) ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

नागबनी स्कूल की ओर से अध्यापक/अध्यापिकाओं तथा छात्र कलाकारों द्वारा बहुत ही सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसमें महर्षि दयानन्द के जीवन को दर्शाती **ऋषिगाथा** नामक नृत्य नाटिका ने सब का मन मोह लिया। स्कूल की अध्यापिकाओं द्वारा बहुत ही उत्साह से स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया जिसकी समस्त श्रोताओं ने हार्दिक प्रशंसा की।

कार्यक्रम के अंत में सेवा प्रकल्प के रूप में सौ से अधिक जरूरतमंद लोगों को कम्बल दान किए गए एवं कुछ गरीब महिलाओं को सिलाई की मशीनें भी दान में दी गई। कार्यक्रम के अंत में 7000 से अधिक अतिथियों ने ऋषि लंगर के रूप में जम्मू के पारम्परिक आतिथ्य का आनन्द उठाया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। - स. प्र. समु. १

संपादक - श्री पूनम सूरी

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 22 दिसम्बर, 2013 से 28 दिसम्बर, 2013

यज्ञ रचा, दान कर

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

न त्वां शतं चन ह्रुतो, राधो दित्सन्तमामिनन्।
यत् पुनानो मखस्यसे।।

ऋग् ९.६१.२७

ऋषिः **अमहीयुः आङ्गिरसः।** देवता **पवमानः सोमः।** छन्दः **गायत्री।**

● (हे आत्मन्!), (**राधः**) धन को, (**दित्सन्तं**) दान करना चाहते हुए, (**त्वा**) तुझे, (**शतं चन**) सौ भी, (**ह्रुतः**) कुटिल वृत्तियाँ व कुटिल जन, (**अ आमिनन्**) हिंसित अर्थात् मार्ग–च्युत न कर पायें, (**यत्**) जब, (**पुनानः**) (स्वयं को) पवित्र करता हुआ। (तू), (**मखस्यसे**) यज्ञ रचाता है।

● हे पवमान सोम! हे स्वयं को तथा मन, बुद्धि आदि को पवित्र करने वाले सात्विक–वृत्ति जीवात्मन्! जब तू परोपकार का यज्ञ रचाता है और अपना धन किन्हीं सत्पात्र व्यक्तियों को या संस्थाओं को दान देने का संकल्प करता है, तब बहुत–सी कुटिल स्वार्थ–वृत्तियाँ और बहुत–से कुटिल मनुष्य तेरे उस दान–व्रत की हिंसा करना चाहते हैं और तुझे दान के मार्ग से विचलित करने का प्रयत्न करते हैं। स्वार्थ–वृत्ति कहती है कि सहस्त्र, दश सहस्त्र, पचास सहस्त्र, लाख, दो लाख रूपया तुम अन्यों को दान कर कर रहें हो, तो क्या स्वयं भूखे मरना चाहते हो? देखो, सब अपनी सम्पति बढ़ा रहे हैं; जो सहस्त्रपति है वह लक्षपति बन रहा है, जो लक्षपति है वह करोड़पति बन रहा है। उनके पास कई–कई कोठियाँ हैं, मोटरकारें हैं, सेवक हैं। क्या दान का ठेका तुमने ही लिया है? क्या तुम्हारे ही भाग्य में यह लिखा है कि स्वयं तो मोटा–झोटा पहनो, रूखा–सूखा खाओ, झोपड़ी जैसे मकानों में रहो और दूसरों पर धन लुटाओ। पहले अपनी और अपने कुटुम्ब की स्थिति सुधारो, फिर अन्यों की सुध लेना। हे आत्मन्! तू उस स्वार्थ–वाणी को मत सुन। तुझे दान करने के लिए उद्यत देख कई स्वार्थी परिचित मनुष्य भी आकर मिथ्या ही आलोचना करते हैं कि तुम जिस संस्था को दान करने जा रहे हो, उसकी आन्तरिक अवस्था को भी जानते हो? उनमें सब खाऊ–पिऊ बैठे हैं, तुम्हारा दिया हुआ दान उन्हीं के पेट में जाएगा। हे आत्मन्! तू उन उन स्वार्थी जनों के भी कुटिल परामर्श पर ध्यान मत दे। सौ प्रकार की स्वार्थ–भावनाएँ और सौ स्वार्थी–जन भी तुझे तेरे दान के संकल्प से विचलित न कर सकें।

हे मेरे आत्मन्! वेद–शास्त्रों की वाणी सुन, जो तुझे दान के लिए प्रेरित कर रही है। तू अपनी कमाई में से प्रतिदिन या प्रतिमास कुछ निश्चित प्रतिशत दान–खाते में डाल और उसे लोक–कल्याण में व्यय कर। दान से दक्षिणा पानेवाले का तो हित होता ही है, उससे भी अधिक हित और मंगल दाता का होता है, यह वैदिक संस्कृति की भावना है। इसके विपरीत, "अकेला भोग करनेवाला मनुष्य पाप का ही भोग करता है"। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

तत्त्व-ज्ञान

● महात्मा आनन्द स्वामी

ओ३म् की ध्वनि में मन को लय करने की बात 'ब्रह्मविद्योपनिषद्' के आधार पर करके स्वामी जी ने 'ऋग्वेदभाष्य भूमिका' में ऋषि दयानन्द जी द्वारा वर्णित 'ओ३म्' के जप की महत्ता की चर्चा की। जब साधक अपने आपको ओ३म् के जप' स्मरण आदि में खो देता है तो उसके हृदय में 'परमात्मा का प्रकाश' आने लगता है। इस विषय में महर्षि दयानन्द जी का अनुभव भी बताया। ध्यान की इस ऊंची अवस्था में पहुंचने का रहस्य खोल दिया।

ध्यान की बात करके स्वामी जी ने ''जीवन के दो मार्गों का तत्त्व'' की चर्चा आरम्भ की। दो मार्ग है–एक मृत्यु की ओर दूसरा पियतम के द्वार की ओर। किस ओर जाना है इस पर विचार करो। समझ लो कि जो कुछ जगत् में दिखाई दे रहा है और लोक जिन तत्त्वों से बना है, मानव शरीर भी उन्हें तत्त्वों से बना है। 'ऋग्वेदभाष्य भूमिका' में महर्षि दयानन्द ने दृश्य और अदृश्य पदार्थों को एक ही सत्ता में स्थिर बताया है। आर्युवेद में कहा–''जो लोक में है, वही शरीर में है। यह समझ लेने पर आत्म बुद्धि उत्पन्न हो जाती है कि आत्मा ही सुख दुःख का कर्ता है, अन्य नहीं।

इसके बाद प्रवृत्ति के मूल और निवृत्ति के उपाय पर विचार किया। प्रवृत्ति और निवृत्ति ही प्रेय तथा श्रेय मार्ग हैं। इस स्वार्थमय संसार में प्रवृत्ति के तीन मार्ग हैं– उत्कृष्ट, मध्यम तथा निकृष्ट। इन तीन प्रकार के स्वार्थों का अवलम्बन लेने वाले यात्री भी तीन प्रकार के हैं।

अब आगे......

कठोपनिषद् के दो मार्ग

कठोपनिषद् में भी मानव–जीवन के दो मार्गों का वर्णन आया है:

श्रेयश्य प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीरः।
श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते।।

कठ0 2।2।।

'श्रेय और प्रेय दोनों मनुष्य को प्राप्त होते हैं। वह धीरे–धीरे उन दोनों को भली–भाँति समझकर अलग–अलग करता है। धीर पुरूष प्रेय की अपेक्षा श्रेय को ले लेता है–अपना लेता है। मन्द पुरूष योगक्षेम से प्रेम को अपनाता है। इससे अगले मन्त्र में यम नचिकेता से कहता है–''हे नचिकेता! तूने प्रिय रूप विषयों को निस्सार समझते हुए छोड़ दिया, इस भोग–सम्पत्तिमय श्रृंखला को तूने स्वीकार नहीं किया जिसमें बहुत मनुष्य मग्न हो जाते हैं, फँस जाते हैं।''

जैसा कि इस अध्याय के आरम्भ में कहा गया है कि प्रेम–मार्ग तो बड़ा सुहावना नज़र आता है। इस मार्ग पर इन्द्रियों का अपने विषयों से मिलाप होता है; कुछ समय के लिए संतुष्टि भी होती है। इसीलिए वह हरा–भरा, आराम देने वाला प्रतीत होता है। और श्रेय सूखी पगडण्डी है– न सजधज, न रौनक, न चहल–पहल, न चमक–दमक, न तड़क–भड़क–सूना मार्ग, प्रलोभनों से निरन्तर युद्ध छिड़े रहने का मार्ग है, प्रिय प्रतीत होने वाले पदार्थों के परित्याग का मार्ग है, यह संयम और अनासक्ति का मार्ग है। प्रेय–मार्ग पर चलने वाले अपने–आपको बड़ा भाग्यवान् और सुखी समझते हैं परन्तु अन्त में सांख्य के सौभ्री मुनि की तरह यही कहने पर बाधित होते हैं कि इस मार्ग पर चलने वालों के लिए कोई सतुष्टि नहीं, कोई शान्ति नहीं और कोई विश्राम नहीं।

सोलोमन (Solomon) के जीवन से भी ऐसा ही पता मिलता है। इस सोलोमन का समूचा जीवन राजकीय विलासिता का जीवन था। इसकी सात सौ स्त्रियाँ थीं। अब विचार कर लीजिए कि इसके पास धन, दौलत, राज्यशक्ति कितनी महान् होगी। परन्तु सोलोमन के अन्तिम शब्द ये थे:

"Vanity of all Vanities-All is Vanity."

ऐसे ही वयोवृद्ध ययाति राजा का अनुभव भी यही है कि:

न जातु कामः कामानां उपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।।

'भोग द्वारा काम की शान्ति नहीं होती, भोगों से तो वह वैसे ही बढ़ता है जैसे घी डालने से अग्नि प्रबल हो उठती है।'

भगवान् मनु का आदेश

'मनुस्मृति' में भी प्रवृत्ति और निवृत्ति– दो प्रकार के जीवनों का वर्णन आता है। भगवान् मनु कहते हैं:

सुखाऽभ्युदयिकं चैव नैःश्रेयसिकमेव च।
प्रवृत्तं च निवृत्तं च द्विविधं कर्म वैदिकम्।।

'वैदिक कर्म के दो भेद हैं– प्रवृत्ति और निवृत्ति। पहला सांसारिक सुख का हेतु है और दूसरा मोक्ष का।'

मानव–जीवन में एक बात प्रत्यक्ष देखी जा सकती है कि यदि मनुष्य में सत्त्व गुण प्रधान हो तो परमार्थ के काम, पवित्र काम और दूसरों के कल्याण के कार्य करने की रूचि होती है और ऐसे व्यक्ति का अन्तरात्मा भी उसका उत्साह

www.thearyasamaj.org

बढ़ाता है। इसके विपरीत गुणवालों का अनुभव दूसरा होता है।

परमात्मा की आवाज़ सुनो!

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने 'सत्यार्थप्रकाश' के सातवें समुल्लास में एक अद्भुत रहस्य बतलाया है। श्रेय या प्रेय मार्ग पर चलने वालों को परमात्मा भी सावधान करता रहता है। वह कैसे? महर्षि का आदेश पढ़िए:

''उसी क्षण में (जब मनुष्य कोई कर्म करने लगता है) आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता, आनन्द और उत्साह उठता है। यह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की और से है और जब जीवात्मा शुद्ध हो के परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है, उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं।

महर्षि ने स्पष्ट बतला दिया है कि प्रत्येक व्यक्ति को परमात्मा अपना आदेश देता है, परन्तु स्वार्थी सुनता हुआ भी नहीं सुनता और कुमार्ग पर चलने लगता है, फिर भी अन्तरात्मा से आवाज़ आती है–''क्या कर रहे हो? सँभलो, पतित न हो जाओ! गिरो नहीं, उठो!''

यह आवाज़ जो सुन लेता है और उसके अनुसार चलता है, वह कुकर्म से बच जाता है और फिसलकर, गिरकर भी पुनः उठकर, सँभलकर, सन्मार्ग पर चलने लगता है। कोई भी पग उठाने, कोई भी कार्य करने से पूर्व परमात्मा से पूछो–''करूँ कि न करूँ?''–अन्तरात्मा से जो ध्वनि उठे, उसे परमात्मा की आवाज़ समझो! इसी को आकाशवाणी कहते हैं।

इस ध्वनि को आकाशवाणी इसीलिए कहा जाता है कि यह हृदयाकाश में विराजमान परमात्मा की ओर से आती है। जो मनुष्य इस आकाशवाणी को या परमात्मा के आदेश को सुनता है और साथ ही लोक और शरीर के तत्त्वों की समानता को भी भली प्रकार हृदयंगम कर लेता है, वह फिर वास्तविकता को समझ जाता है और इन तत्त्वों से ऊपर उठने का यत्न करता है तथा निकृष्ट स्वार्थ से बचे रहने का निरन्तर अभ्यास भी हो जाता है।

विषयों का चिन्तन ही न करो?

यहाँ एक प्रश्न सामने आ जाता है कि प्रवृत्ति–मार्ग पर चले बिना संसारी लोगों का कार्य चल नहीं सकता तो फिर उत्कृष्ट तथा मध्यम स्वार्थ ही से कार्य क्यों नहीं लिया जाता? यह निकृष्ट स्वार्थ अपनाया ही क्यों जाता है? परमात्मा की सामर्थ्य से प्रकृति में जो क्रिया हुई उसके अन्दर से यह काम, क्रोध, मोह, ईर्ष्या, द्वेष तो कहीं पैदा हुए नहीं, फिर ये आ कहाँ से गए? इसका कुछ उत्तर तो कठोपनिषद् के वाक्य में आ गया है, अधिक स्पष्ट रूप से गीता में श्री कृष्ण भगवान् ने बतला दिया है कि सारे अनिष्टकारी पदार्थ कहाँ से आ जाते हैं:

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।।
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति।।

गीता अ0 2 ।62–63।।

'मन में द्वारा विषयों का चिन्तन या ध्यान होता है। विषयों का चिन्तन करने से उन विषयों में आसक्ति हो जाती है। आसक्ति से उन विषयों की कामना उत्पन्न होती है। कामना–शक्ति में विघ्न पड़ने से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से मूढ़भाव उत्पन्न होता है। तब स्मरण–शक्ति भ्रान्त हो जाती है। स्मृति के भ्रान्त होने से बुद्धि का नाश हो जाता है। बुद्धिनाश होने पर मनुष्य नष्ट हो जाता है।'

मन या चित्त ने तो विषयों का केवल ध्यान या चिन्तन किया और उसका परिणाम सर्वनाश निकल आया। मन यदि विकारी न हो, विषयों का ध्यान न करे तो ये विषय मनुष्य के पास आ ही नहीं सकते।

कसौटी आपके हाथ में

पूरा मनन करके शरीर तथा लोक के तत्त्वों और उनके गुणों को भली प्रकार हृदयंगम कर लेना चाहिए।

इस सारी सृष्टि का, जिसे ब्रह्माण्ड कहते हैं, अधिष्ठाता परमात्मा है। इस मानव–शरीर या पिण्ड का अधिष्ठाता आत्मा है।

प्रश्न यह है कि इस आत्मा ने प्रकृति के पाँच भूतों और उनके गुणों ही में फँसा रहना है या इनसे छुटकारा पाकर परमात्मा से मिलना है? प्रभु–मिलन की यदि चाह है तब तो श्रेय–मार्ग पर ही चलना होगा या उत्कृष्ट–प्रेम–मार्ग पर; और यह तभी होगा जब मानव–जीवन की यात्रा में प्रतिदिन आने वाली घटनाओं को देखकर हम उसके श्रेय और प्रेय दोनों भागों को यथार्थ रूप से जान लें। इस अध्याय में यह कसौटी आपको दे दी गई है, जिससे आप स्वयं देख सकते हैं कि हमारे पग किधर उठ रहे हैं। साथ ही यह भी जान सकते हैं कि धीरे–धीरे किस प्रकार अपने–आपको श्रेय मार्ग का या उत्कृष्ट प्रेय मार्ग का यात्री बनाया जा सकता है।

मन के दोष और उनका प्रशमन

आयुर्वेद–शास्त्र में शरीर तथा मन के दोषों का वर्णन किया गया है और उन दोषों के प्रशमन का उपाय भी बतलाया है:

रजस्तमश्च मानसौ दोषौ, तयोर्विकाराः कामक्रोधलोभमोहेर्ष्यामानमदशोकचित्तोद्वेगभयहर्षादयः।।

चरक विमानस्थान अ0 6।5।।

'रजोगुण और तमोगुण मन के दोष हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, अभिमान, मद, शोक, चित्त का उद्वेग, भय और हर्षादिक ये मन के दोषों के विकार अर्थात् मन के रोग हैं।'

वातपित्तश्लेष्माणस्तु खलु शारीरा दोषास्तेषामपि च विकारा ज्वरातिसारशोथशोषश्वासप्रमेहकुष्ठादय इति।। 6। 5।।

'वात, पित्त और कफ ये शरीर में रहने वाले दोष हैं। ज्वर, अतिसार, शोथ, शोष, श्वास, प्रमेह, कुष्ठ आदि उनके विकार हैं।'

इन दोषों के प्रशमन का उपाय चरक सूत्र–स्थान के पहले ही अध्याय में बतलाया है:

प्रशाम्यत्यौषधैः पूर्वो दैवयुक्तिव्यपाश्रयैः।
मानसो ज्ञान विज्ञानधैर्यस्मृतिसमाधिभिः।। 58।।

'शारीरिक रोग दैव और युक्ति का आश्रय लेकर सेवन किए गए औषधों द्वारा शान्त होते हैं और मानसिक रोग ज्ञान, विज्ञान, धैर्य, स्मृति, समाधि के अभ्यास से शान्त होते हैं।'

ज्ञान का तात्पर्य अनात्म और आत्म वस्तुओं का ज्ञान है; विज्ञान सृष्टि–उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय तथा सृष्टि–क्रम ही है; पूरे धैर्य से ज्ञान प्राप्त करके उसे चित्त से टिकाकर, समाधि–अवस्था में जाकर इस ज्ञान–विज्ञान का साक्षात्कार करने ही से पूरी शान्ति मिलती है।

शारीरिक तथा मानसिक रोगों से बचने के लिए और अपने–आपको निवृत्ति–मार्ग या श्रेय–मार्ग का यात्री बनाने के लिए–अथवा प्रेय–मार्ग पर भी चलें तो उत्कृष्ट स्वार्थवाले ही बनें–इसके लिए शारीरिक तथा मानसिक तत्त्वों और लोक–तत्त्वों का कुछ ज्ञान प्राप्त कर लेना आवश्यक है। इन तत्वों के सम्बन्ध में सुश्रुत से अच्छा प्रकाश मिलता है।

आयुर्वेद शास्त्र (सुश्रुत) में पंच महाभूत और आत्मा के संयोग को पुरुष कहा गया है और इसी को 'कर्म–पुरूष' का नाम दिया गया है तथा इस कर्म–पुरूष के 16 गुण बतलाए गए हैं जो ये हैं–(1) सुख, (2) दुःख, (3) इच्छा, (4) द्वेष, (5) प्रयत्न, (6) प्राण=श्वास लेना, (7) अपान=अधोवायुनिःसारण, (8) उन्मेष, नेत्रों का खोलना; निमेष=बन्द करना, (9) बुद्धि, (10) मन=इन्द्रियों की प्रेरणाशक्ति, (11) संकल्प, (12) विचारणा, (13) स्मृति, (14) विज्ञान (चातुर्य), (15) अध्यवसाय, (16) विषयोपलब्धि, अर्थात् शब्द, स्पर्श, रूप आदि का ग्रहण करना। चूँकि पंच–भूत सत्त्व, रजस्, तमस् गुणवाले हैं इसलिए कर्म–पुरूष इनसे अवश्य प्रभावित होता है। जीवों के मन के गुण तब भिन्न–भिन्न हो जाते हैं जिनकी व्याख्या इस प्रकार की गई है:

सत्त्वगुण–प्रधान जीव के मन के गुण–(1) आनृशंस्य=निर्दयता न होना (दयावान्), (2) संविभागरुचिता=औरों को अवश्य देना चाहे अपने लिए पदार्थ रहे या न रहे, (3) तितिक्षा=हर प्रकार के कष्ट सहन कर लेना, (4) सत्यता, (5) धर्माचरण=आस्तिकता, (6) ज्ञान=विचारशक्ति, (7) बुद्धि, मेधा=धारण–शक्ति, (8) स्मृति, (9) धृति=धैर्य, (10) अनभिषंग=बिना किसी लोभ या फल की इच्छा के शुभ कर्म करना।

रजोगुण–प्रधान मन के गुण– (1) विशेष दुःख–बहुलता=दुःखी रहना, (2) पर्यटनशीलता=एक जगह स्थिर प्राय न होना अर्थात् बहुत भ्रमण करना, (3) अधृति=धैर्य न होना, (4) अहंकार=अभिमान करना, (5) झूठ बोलना, (6) दया न रखना, (7) दम्भ=पाखण्ड करना, (8) मान=मान के पीछे भागना, (9) हर्ष=ज़रा सी बात से अति प्रसन्न हो जाना, (10) काम=कामनाओं की पूर्ति ही में लगे रहना, (11) क्रोध=झट क्रोध में आ जाना।

तमोगुण–प्रधान मन के गुण– (1) विषाद रखना, (2) नास्तिकता=ईश्वर व वेद में विश्वास न करना, (3) अधर्मशील होना, (4) बुद्धि का ठीक कार्य न करना=बुद्धि का रुके रहना (5) अज्ञान=धारणा–शक्ति अच्छी न होना, (6) अकर्मशीलता= कोई काम करने का चित्त न चाहना (आलस्य तथा प्रमाद), (7) निद्रा का अधिक आना।

सत्त्वगुणी, रजोगुणी और तमोगुणी जीवों के मन के गुण जान लेने के पश्चात् पंचभूतों के गुण भी जान लेने चाहिए:

आकाश में सत्त्वगुण की विशेषता है।

वायु में रजोगुण की विशेषता है।

अग्नि में सत्त्व तथा रजोगुण दोनों की विशेषता है।

पृथिवी में केवल तमोगुण की विशेषता है।

इन पंचभूतों में से हर भूत में एक और तत्त्व अति सूक्ष्मता से विद्यमान है।

जिस जीव के मन में जो गुण प्रधान है वह उसी प्रकार का व्यवहार करेगा, इसलिए भगवान कृष्ण ने दो प्रकार के मनुष्यों का वर्णन किया है–एक दैवी सम्पदावाले और दूसरे आसुरी सम्पदावाले। आप देख लीजिए कि आपमें कौन–सा गुण प्रधान है। फिर उसके अनुसार अपने जीवन को क्रमशः उन्नत करने का यत्न कीजिए। यदि सत्त्वगुण प्रधान है तब तो आपका इसी जीवन में मोक्ष हो सकता है। यदि रजोगुण या तमोगुण ने घेर रखा है तो इससे छुटकारा पाने का यत्न प्रारम्भ कर दीजिए। उसका साधन यही है कि मनुष्य के सामने जो दो मार्ग खुलते हैं, उनके सम्बन्ध में निश्चय कीजिए कि आप श्रेय–मार्ग के यात्री बनना अपने लिए अच्छा समझते हैं या प्रेय–मार्ग के, और यदि प्रेय–मार्ग ही पर चलना है तो इस मार्ग पर चलते हुए उत्कृष्ट स्वार्थ भला प्रतीत होता है या निष्कृष्ट। इस अध्याय में उन सारे तत्त्वों का वर्णन आ गया है जो आपको सत्त्वगुण–प्रधान बनने में पूरी सहायता दे सकते हैं। इस अध्याय का बार–बार मनन करने से पर्याप्त लाभ होगा।

–क्रमशः

www.thearyasamaj.org

इदं राष्ट्राय इदन्न मम का मूर्तरूप थे अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

● प्रो. ओमकुमार आर्य

उन्नीसवीं शताब्दी में आर्य समाज को ऐसे होनहार सपूत एवं विलक्षण प्रतिभा के धनी महापुरूष मिले जो 19वीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों के दौरान एवं 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक 25–30 वर्षों तक अपनी आभा से विश्व इतिहास के पन्नों को जगमगाते रहे। मानवता का पथ प्रदर्शन करते हुए तथा इस देश के धर्म, संस्कृति के गौरव को बढ़ाकर इसकी भव्य परम्पराओं को और अधिक सुदृढ़ एवं समृद्ध बनाया देशवासियों के आत्मविश्वास एवं स्वाभिमान को जगाकर स्वाधीनता प्राप्ति के पथ को प्रशस्त किया। ऐसा करते समय उन्होंने अदम्य राष्ट्र–भक्ति कर परिचय दिया और राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। एसे कुछ उल्लेखनीय नाम है– पंजाब केसरी लाला लाजपत राय, महात्मा हंसराज, पं. गुरूदत्त, स्वामी श्रद्धानन्द, सशस्त्र क्रांति के अग्रदूत श्यामजी कृष्ण वर्मा आदि। इनमें इस लेख के चरित नायक स्वामी श्रध्दानन्द ने तो गुरूकुल शिक्षा प्रणाली, शुद्धि आंदोलन, दलितो द्वारा एवं कुल मिलाकर अपने प्यारे राष्ट्र की भलाई, उन्नति एवं स्वतंत्रता के लिए सब कुछ राष्ट्र पर वार दिया, इस हद तक वार दिया कि वे 'इदं राष्ट्राय इदन्न मम' की भावना के जीवन्त प्रतीक बन गए इस भावना के वे वास्तव में ही मूर्तरूप थे, ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। ऐसा करने की उनको सशक्त प्रेरणा मिली थी उनके गुरूवर युग प्रर्वतक महर्षि दयानन्द के दिव्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व से।

आइए, कुछ एसे उदाहरण एवं घटना स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से देखिए जो इस कथन की पुष्टि करतें हैं कि वे (स्वामी श्रद्धानन्द) 'इदं राष्ट्राय इदन्न मम' के प्रतीक थे, मूर्तरूप थे, हाड़ मांस के चलते फिरते पुतले थे। स्वामी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा राष्ट्र के प्रति किए गए उनके महनीय कार्य एवं दिए गए अपूर्व बलिदान को ठीक से समझने के लिए हमें उनके जीवन को इन चार कालखण्डों में विभाजित करके देखना होगा।

1. जन्म से (1856) लगभग सन् 1886 तक। एक उद्दण्ड, स्वेच्छाचारी, बिगड़ैल एवं व्यसन–ग्रस्त युवक के रूप में।
2. माहात्म्य (महात्मौचित गुण विशेष पात्रता) प्राप्ति के पथ का पथिक सन् 1881 से लगभग 1895 तक
3. महात्मा मुंशीराम, 1895 से लगभग 1915 तक
4. संन्यास से 'सर्वं वै पूर्णं स्वाहा' पर्यन्त। सन् 1916 से 23 दिसम्बर 1926 तक।

उपर्युक्त विभाजन अपनी सुविधा की दृष्टि से किया गया है, यह कोई अन्तिम अथवा किसी वस्तुनिष्ठ पैमाने पर आधारित नहीं है। स्वामी जी परोपकार, देशोध्दार और राष्ट्र सेवा को प्रारम्भ से ही अपना लक्ष्य बनाए हुए थे। हाँ, युवावस्था में किसी योग्य गुरु के मार्गदर्शन के अभाव में भटक गए थे। किन्तु बरेली में महर्षि दयानन्द से भेंट हो जाने के पश्चात् अपने प्रश्नों का सही समाधान उन्हें मिल गया और वे तीव्र गति से महात्मा कोटि को प्राप्त हुए। उन्होंने पूरी तरह समझ लिया कि–

1. मैकाले द्वारा प्रवर्तित शिक्षा प्रणाली हमारी गुलामी का मुख्य कारण है और इससे हमारा सांस्कृतिक, धार्मिक, नैतिक पतन हो रहा है। यह हमारे सर्वनाश का मूल हेतु है। अतः इस स्थान पर गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली लागू की जानी चाहिए। फलस्वरूप उन्होंने 1902 में गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना करके शिक्षा–जगत् में एक ऐतिहासिक क्रांति का बिगुल बजाया।

2. आर्य/हिन्दू जाति जन्माधारित जाति कुप्रथा के कारण भयंकर अनैतिकता क का शिकार है तथा चालाक, कुटिल विधर्मी धर्मान्तरण के द्वारा हमें अधिक कमजोर कर रहे हैं। पाखण्डियों ने जाने के दरवाजे खुले छोड़ रखे हैं और आने के द्वार सब बन्द कर दिए हैं। स्वामी जी ने अविलम्ब शुद्धि आंदोलन प्रारम्भ करके विधर्मियों में खलबली पैदा कर दी। इस शुद्धि आंदोलन के चलते ईसाई, मुसलमान उनके खून के प्यासे बन गए और अन्ततोगत्वा मतांध मुस्लिम युवक अब्दुल रशीद की पिस्तौल की गोलियों से देश और वैदिक धर्म की पावन बलि वेदि पर 23 दिसम्बर 1926 को अपने प्राण न्यौछावर करके वे अमर हुतात्माओं की पंक्ति में अग्रगण्य हस्ताक्षर के रूप में अंकित हो गए।

3. महर्षि दयानन्द का यह कथन कि विदेशी राज्य चाहे कितना भी अच्छा हो या अच्छा होने का दावा करता हो, वह स्वदेशी राज्य का स्थापनापन्न नहीं बन सकता, अर्थात् –

Good Government (by foreigners) is no substitutes for self governance.

इसलिए देश की स्वाधीनता के लिए वे प्राणपण से स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े और अन्त तक मोर्चे पर डटे रहे। ये तीन – गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की पुनःस्थापना, शुद्धि आंदोलन तथा स्वाधीनता के लिए संघर्ष – वे प्रमुख बिन्दु थे जिनके इर्द–गिर्द स्वामी जी का समस्त जीवन बलिदान पर्यन्त घूमता रहा। अपने आराध्य राष्ट्रदेव की भक्ति और उपासना के लिए वे इन तीनों मोर्चों पर एक निर्भीक, दुर्जेय योद्धा बनकर जूझते रहे और 'इदं राष्ट्राय इदन्न मम' की एक अभूतपूर्व, प्रेरणाधायक, अनुकरणीय मिसाल आने वाली पीढ़ियों के लिये छोड़ गए। वे स्वाधीनता संग्राम के महानायक ही नहीं अपितु राष्ट्रमेध यज्ञ के निष्ठावान् होता भी थे। जिन्होंने वेद की इस उक्ति के अनुसार– 'वयं तुभ्यं बलिहृत स्याम'

अपना बलिदान राष्ट्र हेतु देकर राष्ट्र को स्वयं के लिए सर्वमेधयज्ञ में परिवर्तित कर दिया। मातृभूमि के सच्चे सपूत की तरह अपने राष्ट्र की स्वतंत्रता एकता एवं अखण्डता के लिये – 'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः' की वेदोक्ति के अनुरूप अपना स्र्वस्व 'इदं राष्ट्राय इदन्न मम' कहकर राष्ट्र को समर्पित कर दिया। अपनी चल–अचल संपत्ति राष्ट्र–निमार्ण के महायज्ञ में आहुति संग भेंट कर दी, अपने दोनों बेटे (जो मातृविहीन थे, स्वामी जी ही उनके पिता भी थे और माँ भी थे। हरिपूचन्द और इन्द्र अन्यों के साथ गुरुकुल में प्रविष्ट करवा दिए जहाँ का जीवन उस समय में बहुत ही कठोर अनुशासन परिश्रम, तप त्याग और नियम संयम का जीवन था। यह इसलिए आवश्यक था कि यदि गुरुकुलीय शिक्षा राष्ट्र के नव निर्माण का एक–मात्र उपाय है तो तप की उस भट्ठी में से सबको गुजरना होगा, कोई भेदभाव नहीं किया जा सकता। समाज के आजकल के तथा कथित कर्णधारों को स्वामी जी के शुचि, स्वच्छ एवं पारदर्शी आचरण से सीख ग्रहण करनी चाहिए। उनकी कथनी और करनी में कोई अन्तर नहीं था आजकल के स्वार्थी नेताओं की तरह नहीं कि कथनी यदि पूर्वोन्मुख है तो करनी पश्चिमोन्मुख।

राष्ट्र के लिए किए गए महान् कार्यो की दृष्टि से देखें तो सन् 1918 से 1919 उनके लिए सर्वाधिक घटना–प्रधान वर्ष थे। वे दिन –रौलेट एक्ट' के प्रति तीव्र आक्रोश एवं प्रचण्ड विरोध के दिन थे। ब्रिटिश सरकार का क्रूरतापूर्ण दमन चक्र भी जनाक्रोश के सैलाब को रोक नहीं पा रहा था। ऐसा ही एक सशक्त विरोध प्रदर्शन 30 मार्च 1918 के दिन चाँदनी चौक क्षेत्र (दिल्ली) में स्वामी जी के नेतृत्व में आयोजित किया गया। चाँदनी चौक गवाह है कि संन्यासी की सिंह गर्जना से गौरी हकूमत काँप उठी थी तथा बंदूकों और संगीनों से पूरी तरह बेखौफ उक्त प्रदर्शन सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ था। स्वामी जी सबके सर्वमान्य नेता थे हिन्दुओं के भी और मुसलमानों के भी उनके मुखारविन्द से निकले 'हम' शब्द का अभिप्राय था 'ह' से हिन्दू और 'म' से मुस्लिम। वे प्रथम और अन्त तक के अन्तिम हिन्दू नेता थे जिन को मुसलमान भाइयों ने ऐतिहासिक जामा मस्जिद की मिम्बर पर से वेदमंत्र बोल कर सभा को संबोधित करने की स्वीकृति दी थी। स्वामी जी ने 'ओं त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो' वेद मंत्र बोल कर व्याख्यान दिया था और फिर 6 मार्च 1918 को फतेहपुरी मस्जिद में भी स्वामी जी को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया था। कुछ गैर–मुस्लिम नेता तुष्टीकरण का राग अलापते–2 संसार से चले गये किंतु जामा मस्जिद से सभा को संबोधित करने का कोई अवसर उन्हें जीवन पर्यन्त नसीब नहीं हुआ।

इतना ही नहीं यह स्वामी जी का दम खम ही था कि जब 'जलियाँबाला बाग' के रोंगटे खड़े कर देने वाले पैशाचिक खूनी काण्ड से हर छोटा बड़ा भयभीत था और शानदार सफलता के साथ अधिवेशन संपन्न करवाया। वे अपने प्रिय राष्ट्र और राष्ट्र वासियों के लिए कोई भी जोखिम उठा सकते थे। वे सच्चे राष्ट्र भक्त और राष्ट्रवादी संन्यासी थे। ईश्वर में उनका अडिग विश्वास था, वे महर्षि दयानन्द और वैदिक धर्म के निष्ठावान् अनुयायी थे। अथर्व वेद के काण्ड 12 सूत्र मंत्र 1–63, यजु 22/22 ऋग्वेद 1/80/ सभी मंत्र, तथा अन्यान्य वेद मंत्रों में राष्ट्र विषयक जो उदात्त अवधारणा एवं परिकल्पना है स्वामी जी का उन सबमें अटूट एवं अडोल विश्वास था। उन मंत्रों को उन्होंने मात्र पढ़ा ही नहीं था अपितु उनको जीवन में जीया। इन मंत्रो से ही उन्होंने 'इदं राष्ट्राय इदन्न मम' का पाठ सीखा था जिस पाठ की भावना के वे प्रतीक बन गए थे, मूर्तरूप बन गए थे। उसी पथ का पथिक बनकर अंततोगत्वा 23 दिसम्बर 1926 के दिन वे राष्ट्र के लिए अपना जीवनोत्सर्ग करके अमरता के अमिट हस्ताक्षर बनकर इतिहास के पृष्ठों पर अंकित हो गए। हम महान राष्ट्रनायक को कोटिशः नमन करते हैं इन शब्दों में–

संन्यासी तुम ऊँचा कर गए भारत भू का माथ।
युगों–युगों तक गाएगा इतिहास तुम्हारी गाथ।।

संकट की घड़ियों में ये आकाश के चाँद सितारे तेरा आह्वान किया करेंगे। अपनी भुजा पसारे जब तक बहेगी हिम गिरि से गंगा की निर्मल धारा तब तक अमर रहेगा स्वामी प्रेरक नाम तुम्हारा। तुम प्रहरी थे देशधर्म के तुम अमर बलिदानी तुम युग–नायक, युग प्रवर्तक तुम अदम्य सेनानी। तेरे पद चिन्ह अमिट रहेंगे क्रूर काल की छाती पर 'इंद राष्ट्राय इदन्न मम' से गुंजित रहेंगे अवनी अंबर।

1607/7, जवाहर नगर,
(पटियाला चौक, जींद (हरियाणा) –126102
09416294347, 01681–226147

www.thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द एक अद्भुत व्यक्तित्व

● सहदेव वर्मा

विपदिधैर्यमथाभ्युदयेक्षमा,
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरूचिर्व्यसनं श्रुतौ,
प्रकृति सिद्धमिदं हि महात्मनाम्।।'

अमर हुतात्मा, वीत राग अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन का यह श्लोक साक्षात् दर्पण है। आज के तथाकथित नेता हिन्दू मुस्लिम एकता का राग मात्र ओछी राजनीति तथा गद्दी हथियाने की वजह से करते हैं। वे भूल जाते हैं कि सन् 1920–21 में दिल्ली की गली में एक ही नारा था–'यह श्रद्धानन्द की दिल्ली है, यह अजमल खाँ की दिल्ली है।'

350 वर्षों में कोई ऐसा उदाहरण है विश्व के इतिहास में जब किसी गैर मुस्लिम ने दिल्ली की विशाल जामा मस्जिद के मिम्बर (वेदी) पर खड़े होकर भारतीय जनता को एकता भाईचारे और प्रेम का उपदेश दिया हो? इसका एक केवल एक ही उत्तर है–''वे है अमर शहीद आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी'। यह उपदेश वेद मंत्र से शुरू हुआ और ओम शांति पर समाप्त।

स्वामी जी मात्र प्राचीन अपरा–परा विद्या के ही समर्थक नहीं थे, वरन् आधुनिक ज्ञान–विज्ञान के भी प्रबल समर्थ थे। श्री एन्ड्रूज जब शान्ति निकेतन से गुरुकुल में आकर स्वामी जी से मिले तो उन्होंने रवीन्द्र बाबू के काव्य कानन में किलकने वाले छात्रों की चर्चा की। तब मं. मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) ने कहा था–'गुरुदेव के आश्रम में विद्यार्थी कविता गाते हैं, परन्तु गुरुकुल में विद्यार्थी कविता जीते हैं।' सन् 1915 ई. में गाँधी जी बिना किसी पूर्व सूचना के अचानक गुरुकुल पधारे थे। तब तक गाँधी जी को भारत में इने गिने लोग ही जानते थे परन्तु मं. मुंशीरामजी उनके कार्यों से परिचित थे। 8 अप्रैल 1915 को गुरुकुल में उनका विशेष अभिनन्दन किया गया। उस समय गाँधी जी ने मं. मुशीरामजी जी के चरण स्पर्श करके उन्हें नमस्कार किया था। यह स्मरणीय है कि आज गाँधी जी जिस महात्मा शब्द से विश्वविख्यात हैं इसका प्रयोग सर्वप्रथम इसी अभिनन्दन पत्र में किया गया था। 'पाठक गण नोट कर लें कि कुछ नहीं अनेक व्यक्ति नादानी से गाँधी जी के लिए महात्मा' शब्द का श्रेय कभी रवीन्द्र नाथ ठाकुर को देते हैं कभी एन्ड्रूज को और कभी एनी बेसेन्ट को। वे शायद आर्य समाज के स्वामी श्रद्धानन्द को इस प्रकार का महत्व देने से बिदकते हैं। उन्हें ध्यान रखना चाहिए कि गाँधी जी से बहुत पहले स्वतंत्रता तथा स्वदेशी की भावना, अछूतोद्धार का कार्य, राष्ट्रभाषा प्रेम, का विचार सर्वप्रथम आर्य समाज ने ही प्रतिपादित किया था। तब तक न तो भारतीय कांग्रेस का जन्म हुआ था, न गांधी जी का कार्यक्रम चला था। 1915 में गुरुकुल में ही गाँधी जी ने कहा था। तब तक न तो भारतीय कांग्रेस का जन्म हुआ था, न गाँधी जी का कार्यक्रम चला था। 1915 में गुरुकुल में ही गाँधी जी ने कहा था :– ''मैं महात्मा जी का बन्दा बनकर यहाँ आया हूँ। आर्यों ने स्वार्थ त्याग शिक्षा और भारत के हित में जो महत्वपूर्ण कार्य किये हैं, मैंने गत चौदह वर्षों से उन्हें देखा है। अतः मै इनका सत्संग करना चाहता हूँ।

जिस समय रौलट एक्ट लागू किया गया, तब मौखिक रूप से उसका विरोध करने वाले तो अनेक नेता थे, पर संगीनी बन्दूकों से लैस ब्रिटिश सेना के सामने सीना तान कर छाती पर संगीनों का वार और गोलियों की बौछार झेलने के लिए कुर्ते के बटन खोल कर बेखौफ हो सेना को चैलेन्ज करने वाला तो केवल एक ही नर सिंह था– 'श्रद्धानन्द।'

रौलेट एक्ट के विरोध की बयार बही तो विशाल जलूसों और भारी प्रदर्शनों का दौर चला। उस समय की हिन्दू मुस्लिम एकता का अपूर्व दृश्य देखते ही बनता था। 31 मार्च 1919 को लगभग 50 हजार लोगों ने शोक मनाते हुए उन मुस्लिम शहीदों का जनाजा निकाला जो पहले दिन शहीद हो गये थे उस दिन दिल्ली के समस्त मुस्लिम समाज ने ''एक स्वर से मुस्लिम शहीदों के तर्पण (फातिहा खानी) के लिए स्वामी श्रद्धानन्द को ही आमंत्रित किया।'' जामा मस्जिद के मुख्य इमाम ने उनका हार्दिक स्वागत करते हुए निवेदन किया कि आप मस्जिद के मिम्बर (पवित्र वेदी) से शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित कीजिये। आर्य संन्यासी ने वेद मंत्र से शुरू कर ओम् शांति पर अपना प्रेम भाईचारा तथा देशभक्ति का संदेश प्रसारित करते हुए शहीदों को सादर श्रद्धांजलि अर्पित की।

अभी रौलट एक्ट का घाव हरा ही था कि बैशाखी के पवित्र पर्व पर उत्सव मनाते हुए एक मदान्ध सैनिक अधिकारी जनरल डायर ने जलियाँ वाले बाग में अन्धाधुन्ध मशीनगन से गोलियों की निरअपराध नागरिकों पर बौछार कर दी सैकड़ों लोग मारे गये हजारों घायल और अपंग हो गये। जब जनरल से पूछा गया कि क्या बिना गोली चलाये काम नहीं चल सकता था? उसने बड़ी बेशर्मी से जवाब दिया:– 'हाँ–मैं उस भीड़ को बिना गोली चलाये भी तितर–बितर कर सकता था।' फिर आपने गोलियाँ क्यों चलाई? 'तब सब लोग मेरा मजाक उड़ाते औ मुझे बेवकूफ समझते।' वाह! क्या जवाब है! चुल्लूभर पानी में डूब मरना चाहिए।

एक तरफ गली–गली में फौज आम जनता को बूटों से रौंद रही थी। उधर कांग्रेस के भावी अधिवेशन पर संकट के बादल घुमड़ रहे थे। ऐसी उथल–पुथल अराजकता तथा भय के वातावरण में निर्धारित अधिवेशन भला कैसे संभव था? पर स्वामी श्रद्धानन्द तो ऐसे विपरीत अवसरों का सामना करने को ही जीवन की कसौटी मानते थे। देश का कोई भी नेता कराची से कलकत्ता और कश्मीर से कन्या कुमारी तक वहाँ अधिवेशन के पक्ष में नहीं था परन्तु आर्य संन्यासी ने हठ पकड़ ली–अधिवेशन होगा और अमृतसर में ही होगा। भले ही मशीनगनों और बन्दूकों की गड़गड़ाहट हो। तब नेताओं ने विशेष रूप से पं. मदन मोहन मालवीय ने स्पष्ट रूप से कहा– 'आप दूसरे नेताओं तथा दूसरे प्रदेशों से किसी भी प्रकार की सहायता व सहयोग की आशा न करें– जो करना है अपने बूते पर करें।

ऐसी विषम परिस्थिति में आत्मविश्वास के धनी और ईश्वर विश्वासी संन्यासी ने उस चुनौती को स्वीकार किया। जब कोई स्वागताध्यक्ष भी बनने को तैयार न हुआ तो गाँधी जी की सलाह पर उन्होंने यह भार भी अपने कन्धों पर ले लिया। हल्की बूंदा–बांदी और सर्दी के बीच अधिवेशन की तैयारी शुरू हो गई बड़े परिश्रम से चौरस भूमि तैयार कर विशाल पण्डाल खड़ा किया। दर्जनों छोलदारियाँ प्रतिनिधियों के ठहरने के लिए तैयार की गई। अन्य सभी प्रबन्ध जो कई सौ प्रतिनिधियों की सुविधा के लिये तैयार किये गये थे, पूर्ण हो गये। कहते हैं 'आपत्ति काले मर्यादा नास्ति।' यहाँ भी वही हुआ विधाता की लीला देखिये– 'सिर मुण्डाते ही ओले पड़े।' प्रकृति का ऐसा दुर्दमनीय चक्र चला कि पूरी तैयारी पूर्ण होने पर उस क्षेत्र मे ऐसी घनघोर वर्षा हुई जैसी विगत 50 वर्षों में कभी नहीं हुई थी। अमृतसर की गलियों और बाजारों में दो–दो फुट पानी भर गया। अधिवेशन के लिए बने पण्डाल के पर्दे, बाँस बल्लियाँ सजावट का सामान, बोर्ड, कनातें सब कुछ बाढ़ के पानी में बह गया। दर्जनों छोलदारियाँ बाढ़ के पानी में कागज की नाव की तरह तैरने लगी। समस्त परिसर एक विशाल झील के रूप में परिवर्तित हो गया। चारों तरफ जल हिलोरें ले रहा था। दिल दहलाने वाली बात यह थी कि वह 24 दिसम्बर की रात थी उसी दिन अमृतसर में कलकत्ता, बम्बई, मद्रास , पटना, कराची, लखनऊ आदि देशभर के नगरों से 12 स्पेशल रेलगाड़ियाँ अधिवेशन में सम्मिलित होने वाले प्रतिनिधियों को लेकर अमृतसर आने वाली थीं। पाठकगण सोचिए इस रोंगटे खड़े कर देने वाली अनहोनी आपदा में उस बृहद् अधिवेशन के कार्यकर्ताओं और विशेष रूप से (संयोजक) स्वामी श्रद्धानन्द के तन मन पर क्या गुजर रही होगी? कल्पना से भी हृदय काँपता है।

पर वाह रे नर नाहर श्रद्धानन्द! अगाध आत्मविश्वास और अतुल साहस का पुंज वह पुरुष सिंह न तो सिर पकड़ कर बैठा और न भाग्य को कोसने में उसने समय बर्बाद किया, न ही उसने आपत्कालीन मीटिंग बुलाई। बस कुछ विश्वस्त कार्यकर्ताओं को आवश्यक निर्देश देकर वह नर केसरी नंगे सिर और नंगे पैर अमृतसर की गली–गली और एक–एक मौहल्ले में घूमकर लोगों से अपील कर रहा था– 'अमृतसर वासियों! देशभर से आने वाले प्रतिनिधियों के लिए अपने घरों में स्थान खाली करो। उनके भोजन आदि की व्यवस्था कर अतिथि सेवा कर अपने नगर की लाज बचाओ। भारत माता आपकी ओर आशा भरी निगाहों से निहार रही है। यह आपके लिये परीक्षा की घड़ी है। समय कम है जिम्मेदारी अधिक है–उठो–बढ़ो–फर्ज पूरा करो।' आर्य संन्यासी की इस अपील का नगरवासियों पर जादुई असर हुआ। लोग तुरन्त अपने–अपने वाहन लेकर रेलवे स्टेशनों पर पहुँच गये और जिनके सामने जो प्रतिनिधि आया उसी को अपने घर ले गये और उनके ठहरने तथा भोजन आदि की उचित व्यवस्था की।

बाहर से आये प्रतिनिधि बड़ी हताशा तथा असमंजस में थे। स्वाभाविक था एक तो सरकारी प्रकोप। ऊपर से वर्षा की दैवी आपदा, हाड़ कंपाने वाली तेज बर्फीली दिसम्बर की शीतलहर। पर अमृतसर के साहस और सेवा से कांग्रेस के प्रतिनिधि अभिभूत हो उठे और उनकी जी भरकर सराहना की।

इन सब आपदाओं के बावजूद कांग्रेस का वह ऐतिहासक अधिवेशन शुरू हुआ। कांग्रेस के इतिहास में यह पहला अवसर था जब मंच से एक भगवा वेशधारी तेजस्वी संन्यासी ने राष्ट्रीय महासभा के मंच से स्वागताध्यक्ष के रूप में राष्ट्रीय भाषा (हिन्दी) में अपना भाषण दिया। कुछ अंश: 'देश के कोने से पधारे मान्य प्रतिनिधिगण, जिस हकूमत के नशे में चूर मनुष्यों का जीवन ही स्वार्थ में लिप्त हो, उनकी समझ में न तो सत्य का गौरव आ सकता है और न वे सत्याग्रह की शान और गम्भीरता को समझ सकते हैं। माननीयों! यदि प्यारे राष्ट्र को

शेष पृष्ठ 7 पर ☞

www.thearyasamaj.org

वेद प्रवचन सार–

ऋषिका सूर्यासावित्री द्वारा दर्शित षट्क सम्पदा

● देवनारायण भारद्वाज

हर्ष– विवाद की सामाजिक व्यस्तताओं के कारण लेखनी मौन होकर अचल हो गयी थी, किन्तु आज चल उठी, क्योंकि उसने दूरदर्शन के धार्मिक आस्था मंच से कथावाचक द्वारा गाये गये इस भक्ति गीत को सुन लिया।

मैय्या करा दे मेरो ब्याह बिरज की छोरी से, राधिका गोरी से।
उमर तेरी छोटी है, नजर तेरी खोटी है,
कैसे करा दूं, तेरा ब्याह,
बिरज की छोरी से राधिका गोरी से।।

कथा वाचक महोदय ने झूम–झूम कर गाते हुए इस गीत पर उपस्थित नर–नारियों को नृत्य के लिए प्रेरित किया, और वह पूरा धार्मिक सभा–मण्डप, वासना का दण्डक बन गया। लेखक पर यह मिथ्यारोप लगाया जा सकता है कि – बुद्धि तेरी छोटी है–नजर तेरी खोटी है, किन्तु यह आरोप तब निराधार होकर निरस्त हो जाता है, जब परिवार, समाज में सर्वत्र–दुराचार की अवांछित घटनाओं की भरमार दिखाई देती है। यहाँ तक कि विवाह पूर्व सहसम्बन्ध के प्रकरण न्यायालय में पहुंचते हैं, जो ऐसे ही धार्मिक उदाहरणों के आधार पर मान्य कर दिये जाते हैं।

वेद में मन्त्र द्रष्टा ऋषियों की जहाँ एक लम्बी श्रृंखला है वहीं कतिपय ऋषिकायें भी अपने समुज्ज्वला रूप से दिखाई देती हैं, उन्हीं में से एक है सावित्री सूर्या, जिन्होंने अथर्ववेद काण्ड चौदह के मन्त्रों से विवाह एवं दाम्पतिक जीवन द्वारा परिवार–समाज–राष्ट्र में सात्विकता एवं समुन्नति का सन्देश दिया है। वैदिक विवाह संस्कार में इसके द्वारा दृष्टांकित अनेक मन्त्रों से वर–वधू को प्रेरणा प्रदान की गयी है।

निदर्शन स्वरूप यहाँ पर छः मंत्रों का एक पुष्प गुच्छ प्रस्तुत है। विशेषता यह है कि अथर्ववेद 14.2.53–58 के इन छहों की शब्दावली एक शब्द को छोड़कर समान है। मन्त्र ध्यातव्य हैं:–

बृहस्पतिनावसृष्टां विश्वदेवा अधारयन्। वर्चो गोषु प्रविष्टं यत् तेनेमां सं सृजामसि।।

प्रथम मन्त्र में जहाँ 'वर्चो' है, वहाँ आगे के पाँच मन्त्रों में क्रमशः 'तेजो–भगो–यशो–पयो एवं रसो' शब्द है। इन छहों शब्दों से जो सोपान बनता है उसका ध्यान इस प्रकार करते हैं। 'वर्च' से प्रकाश व ज्ञान मिले, 'तेज' से पालन–पोषण रक्षा के साधन मिले, 'भग' से कलुष कालिमा रहित धनैश्चर्य मिले, 'यश' से सात्विक सम्पदा को दुरूपयोग से बचाकर सदुपयोग द्वारा मान–बड़ाई मिले, 'पय' से दुग्धवत श्वेत पोषण का विस्तार मिले और 'रस' से जीवन की नीरसता हटकर समयता का स्वाद, प्रीति एवं आनन्द का स्रोत–'रसो वै वः' (तै. उपनिषद्) के सारश्रृंगार स्वरूप परमात्मा का संस्पर्श एवं सान्निध्य मिल जाये। प्रकाश हो उसमें तेज न हो तो उसके टिमटिमाने से क्या लाभ, तेज हो, उससे कुछ भी कमाई हो, किन्तु भग–ऐश्वर्य का सृजन न हो, तो उस तेज का क्या लाभ, धनधान्य हो किन्तु यश न हो तो उस ऐश्वर्य का क्या लाभ, यश हो किन्तु उसमें पय (दुग्ध) की धवलता, प्रवाहकता, पोषण व विस्तार न हो तो उस यश का क्या लाभ, पय (दुग्ध) की प्रवाहकता हो, किन्तु उसमें रसमयता, आस्वाद और माधुर्य न हो तो उस पय प्रवाह का क्या लाभ, रस हो किन्तु उसमें आनन्द का स्रोत "रसो वै सः" अर्थात् परमेश प्रभु का संदर्भ न हो तो उस रस से क्या लाभ?

आनन्द स्रोत बह रहा, पर तू उदास है। अचरज है जल में रहकर भी मछली को प्यास है।

प्रायः हम योग का प्रयोग जीवात्मा के परमात्मा से जुड़ने के लिए करते हैं, किन्तु योगीराज श्री कृष्ण जी ने श्रीमद् भगवद्गीता (2/50) में **"योगः कर्मसु कौशलम्"** अपने कर्मों में कौशल का नाम ही योग कहा है। इसके लिए 'योगदर्शन' हमें **"योगश्चित्तवृत्ति निरोधः"** कहकर चित्त की वृत्तियों को नियन्त्रित करने का निर्देश देता है। आज साधारण दुकानदार भी इलैक्ट्रोनिक तुला पर सामान तोलते हैं, किन्तु न्याय की तुलना अब भी दो पलड़ों की तराजू ही मानी जाती है, जो इधर–उधर झुकने S/c की भांति हमारे सम्पूर्ण जीवन का केन्द्र 'चित्त' है और यह हमारा **"चित्त का प्रसादनम्–चित्तप्रसादनम्"** के बिन्दु पर ठहर जाता है अर्थात् प्रस्तुत अवांछित वृत्तियों से निष्प्रभावी हो जाता है, तभी चित्त मन्त्र में बताये गये रत्नों के प्रवेश से आलोकित होकर मानव जीवन को सफलता और प्रभु प्रेम की रसमय विमलता प्रदान करता है। समय–समय पर आने वाली चतुर्दिशाओं से चित्त में प्रविष्ट होने वाली वृत्तियों को रोकने के लिए योग दर्शन हमें चार प्रकार के कवच प्रदान करता है – वे हैं **"मैत्री करूणा मुदितोपेक्षाणाम्"** :–

(1)मैत्री करें ईर्ष्या नहीं :– सुख साधन, सद्गुण, यश सम्पन्न लोगों को देखकर चित्त में ईर्ष्या का प्रवेश होता है, और वह विचलित हो उठता है, उसे डाह का रूप न देकर वाह–वाह का स्वरूप प्रदान कर ऐसे लोगों से मैत्री की भावना बनायें तो चित्त का अवसाद हटकर प्रसाद से परिपूर्ण हो उठेगा।

(2) करुणा करें घृणा नहीं :– किन्हीं कारणों से किसी के शरीर में कुरूपता, अशक्यता, निन्दा व्याधि भर गयी है, वह सन्तप्त है। वह है तो दुराचारी, समाज में उसकी इसी प्रकार की कुख्याति भी है, किन्तु स्वयं को सदाचारी घोषित करते हुए सदाचारियों में घुसता रहता है, ऐसे व्यक्तियों से घृणा न करके करुणा का भाव जगायें और अपने चित्त को निर्मल बनाये रखें।

(3)मुदित हों कुपित नहीं :– कोई व्यक्ति पुण्यात्माओं को देखता है, जब उनका सम्मान होता है, उस सम्मान को सहन नहीं कर पाता है, तब उसका चित्त कुपित हो उठता है, द्वेष से भर जाता है। इस द्वेष व कोप को दूर करने के लिए उनके प्रति हर्ष की भावना करनी चाहिए। चाहे दूर के हों या पास के, ऐसे व्यक्तियों के प्रशंसक बन जाना चाहिए। इस प्रकार चित्त में प्रसाद होगा। अवसाद नहीं। अंग्रेजी का फेन (Fan) शब्द इसी रूप में प्रयोग किया जाता है।

(4) उपेक्षा करें अपेक्षा नहीं :– अपुण्यात्माओं का सामना भी करना पड़ता है। ऊपर से सभ्य दिखाई देने वाले व्यक्ति अन्दर से असभ्य, आपके उत्कर्ष को सहन नहीं कर पाते हैं और वे अपनी बातों से ही आपको अपमानित तथा उदास करना चाहते हैं। उनके असम्बद्ध प्रलाप को – 'नंग बड़े परमेश्वर से' की लोकोक्ति को ध्यान में रखकर अनसुना कर देना उचित है, क्योंकि उनसे आप जितनी भी वार्ता करेंगे, उनका यह प्रलाप बढ़ता ही जायेगा और आपका चित्त खिन्न होता जायेगा। अस्तु ऐसे व्यक्तियों की उपेक्षा करके आप अपने चित्त को शान्त रख सकते हैं।

चारों ओर से प्रहार करने वाली भौतिक कुचेष्टाओं से बचने के लिए यह चार उपाय तो ठीक हैं, किन्तु धरती–आकाश को मिलाकर छहों दिशाओं से मानव–मस्तिष्क में भरने वाले सूक्ष्म षड्यन्त्र के निष्कासन हेतु सत्यार्थ प्रकाश–नवम समुल्लास में महर्षि द्वारा व्यक्ति **षट्कसम्पत्ति** का सहारा वांछनीय है। एक–**'शम'** जिससे S/c नेत्रादि इन्द्रियों और शरीर को व्यभिचारादि बुरे कार्यों से हटाकर जितेन्द्रियत्वादि शुभ कर्मों में प्रवृत्त रखना। तीसरा **'उपरति'** जिससे दुष्कर्म करने वाले पुरुषों से सदा दूर रहना। चौथा **'तितिक्षा'** चाहे निन्दा, स्तुति, हानि–लाभ कितनी ही क्यों न हो, परन्तु हर्ष–शोक को छोड़कर मुक्ति के श्रेष्ठ कर्मों (साधना में) में सदा लगे रहना। मुक्ति ही नहीं सांसारिक सफलता की भी यही युक्ति है। पांचवां – **'श्रद्धा'** जो वेदादि सत्यशास्त्र और इनके बोध से पूर्ण आप्तविद्वान, सत्योपदेष्टा महाशयों को वचनों पर विश्वास करना। छठा–**'समाधान'** ध्येय के प्रति चित्त की एकाग्रता बनाये रखना। अंग्रेज़ी कहावत के अनुसार खाली मस्तिष्क पैशाचिक कर्मशाला होता है। इस षटक् सम्पत्ति के अनुसरण से मानव मस्तिष्क का कुरुक्षेत्र "वर्चस्व, तेज, भग, यश, पय

शेष पृष्ठ 8 पर ☞

वेद में मन्त्र द्रष्टा ऋषियों की जहाँ एक लम्बी श्रृंखला है वहीं कतिपय ऋषिकायें भी अपने समुज्ज्वला रूप से दिखाई देती हैं, उन्हीं में से एक है सावित्री सूर्या, जिन्होंने अथर्ववेद काण्ड चौदह के मन्त्रों से विवाह एवं दाम्पतिक जीवन द्वारा परिवार–समाज–राष्ट्र में सात्विकता एवं समुन्नति का सन्देश दिया है। वैदिक विवाह संस्कार में इसके द्वारा दृष्टांकित अनेक मन्त्रों से वर–वधू को प्रेरणा प्रदान की गयी है।

निदर्शन स्वरूप यहाँ पर छः मंत्रों का एक पुष्प गुच्छ प्रस्तुत है। विशेषता यह है कि अथर्ववेद 14.2.53–58 के इन छहों की शब्दावली एक शब्द को छोड़कर समान है। मन्त्र ध्यातव्य हैं:–

स्वामी श्रद्धानन्द

● मनुदेव 'अभय'

जिन्होंने इतिहास के उन पृष्ठों को पलटा है जब प्रौढ़ गांधीजी दक्षिण अफ्रीका से सन् 1914–15 में भारत आए। यद्यपि यहाँ आने के पूर्व उनके कई अंग्रेज मित्र थे, फिर भी उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द से मिलने की उत्कृष्ट इच्छा से गुरुकुल कांगडी (हरिद्वार) में अपना डेरा डाला। यहाँ आने की एक प्रेरणादायी पृष्ठ भूमि यह थी कि गांधीजी जिन दिनों फीनिक्स आश्रम में रंग भेद के विरूद्ध लड़ाई लड़ रहे थे, तब उन्होंने आर्थिक–सहयोग की अभ्यर्थना भारत से की थी। उन दिनों गुरुकुल में 2–3 अंग्रेजी समाचार पत्र आते थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने उन समाचारों के आधार पर गुरुकुल की ओर से आर्थिक सहयोग करने का सोचा। गुरुकुल के छात्रों ने दिसम्बर की ठंड में गंगा किनारे श्रम कर कुछ रुपए इकट्ठे किए और वह राशि स्वामी श्रद्धानन्द के गांधीजी को 'गुरुकुल से सहयोग' के नाम से भेज दी। इससे गांधीजी बड़े प्रभावित हुए। स्वामी श्रद्धानन्द और गांधीजी का यह अप्रत्यक्ष मिलन था और इसका माध्यम था सहयोग।

स्वामी श्रद्धानन्द आयु, ज्ञान अनुभव तथा सेवा में गांधी जी से श्रेष्ठ थे। लेकिन, हाँ, इन दोनों में एक साम्य था– कानून विद् होने का। दोनों विधिविद् होते हुए भी इस श्रेय को इसलिए छोड़ चुके थे कि इस व्यवसाय में अनेकों बार साक्ष्य को छिपाकर, अपनी अंतरात्मा की आवाज (सत्य) को दबाकर अपने पक्ष को विजयी बनाने के लिए साक्ष्य खड़े किए जाते थे, और अपने पक्ष में न्याय को मोड़ने का प्रयास करना पड़ता था। इन दोनों को अन्तरात्मा की आवाज (सत्य) को दबाना रुचिकर नहीं लगा, और वह क्षेत्र छोड़ दिया।

इस सन्दर्भ में स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा लिखित प्रसिद्ध पुस्तक 'इन साइड दी कांग्रेस' (भाषा–इंग्लिश) में चर्चित महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रस्तुत करना सम–सामयिक लग रहा। इसमें गांधी, अली बंधु, मोती लाल नेहरु आदि के कार्यों पर प्रकाश डाला गया है।

स्वामी श्रद्धानन्द कांग्रेस में देश सेवा हेतु शामिल हुए थे। परन्तु हिन्दू मुस्लिम एकता के नाम पर मुसलमानों की चापलूसी, हिन्दू हितों की उपेक्षा, खिलाफत को समर्थन, दंगों की भर्त्सना तक न करना, अछूत कहे जाने वाले 6 करोड़ हिंदुओं के विषय में कोई भी कदम न उठाना जैसे अनेकों विषय थे, जिनके कारण स्वामीजी को कांग्रेस से अलग हो जाना पड़ा।

सन् 1920 में कांग्रेस अधिवेशन में गांधीजी द्वारा खिलाफत आन्दोलन में कांग्रेस का सहयोग देने की अपील की गई। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा अछूतोद्धार की अपील को दरकिनार कर सारा ध्यान टकी की खलीफा के समर्थन में लग गया। वहीं अली बंधु गांधीजी को चालाक बनिया व हिंसा का समर्थक कहते थे। खिलाफत को 1920 नागपुर अधिवेशन में कुरान की जेहाद–संबंधी आयातों को जब पढ़ा गया तो स्वामी श्रद्धानन्द ने गांधीजी का ध्यान इस ओर दिलाया। आरम्भ में तो इन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया पर बाद में कहा कि ये आयतें अंग्रजों के विरुद्ध कही जा रही हैं। तब स्वामी जी ने कहा कि ये हिन्दुओं के विरुद्ध हैं और अगले ही वर्ष 1921 में दक्षिण भारत के मोपला दंगों के रूप में अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई।

सन् 1921 में गांधीजी ने वर्ष के अन्त तक स्वराज्य प्राप्ति का लक्ष्य रखा। परन्तु यह कैसे संभव होगा, यह किसी भी कांग्रसी को मालूम न था। इधर 4 आने वाले सदस्य बनाने की मुहिम छेड़ दी गई। दिल्ली कांग्रेसपार्टी ने चमारों के चौधरी को बुलाकर अधिक से अधिक सदस्य बनाने की अपील की। चमारों के चौधरी ने कहा हमें सभी कुँओं से पानी भरने का अधिकार दे दिया जाए तो हम सहयोग करेंगें। इस पर कांग्रेस के एक अधिकारी ने कहा, 'स्वराज्य शीघ्र प्राप्त करना है चमारों को अधिकार के लिए प्रतीक्षा की जा सकती है।''इस पर स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्य समाज द्वारा जातिवाद के विरुद्ध किये जा रहे कार्य को गति देने व हिन्दुओं से इस कुरीति को दूर करने की अपील की। ज्ञातव्य है कि एक फतवा दिया गया था कि अगर चमारों को हिन्दु कुँओं से पानी भरने देंगे तो उन्हें रोकेंगे क्योंकि चमार जाति सुअर का प्रयोग करती है।

दिल्ली की जामा मस्जिद के गुम्बद से स्वामी जी ने यह मंत्र बोला–त्वं हि नः **पिता वसो त्वं माता। शकक्रतो बभूविथ। अधाते सुन्नमीमहे।।**

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।

संसार के इतिहास में यह प्रथम अन्तिम घटना थी, जब एक काफिर (गैर मुसलमान) वेद मंत्र का उच्चारण एक मस्जिद के मिम्बर से कर रहा था। इतना ही नहीं, इसके बाद दिल्ली के मुसलमानों ने अन्य मस्जिदों से भी व्याख्यान करवाए। मुसलमानों पर स्वामी श्रद्धानन्द के अमिट प्रभाव की सूचना भी गांधीजी को सुनाई गई। अपनी लोक–प्रियता में आड़े आने वाले श्रद्धानन्द के कारण अपनी व्यक्तिगत पूजा में बाधा सी लगी।

स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या, जब कि वे निमोनिया रोग से थोड़े से निवृत्त हुए थे, अब्दुल रशीद नामक फटेहाल मुसलमान की पिस्तौल से करा दी गई। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक काला अध्याय जुड़ गया। गांधीजी की मुस्लिम तुष्टीकरण नीति, शुद्धि आन्दोलन का हरिजनों में सतत विरोध तथा तात्कालिक ब्रिटिश शासन की कूटनीति ने ही एक साधु की हत्या करा दी। गांधीजी ने अब्दुल रशीद हत्यारे को भटका हुआ भाई कहा कांग्रेस की नरमदलीय नीति, मुस्लिमों के तलवे चाटने की आदत के चलते गांधी जी द्वारा यह प्रयत्न किया गया कि अंग्रेज़ सरकार अब्दुल रशीद को फाँसी की सजा न दे। इसमें हिन्दू मुस्लिम सौहार्द बनाए रखने में बाधाएँ उत्पन्न होने की शंकाएँ की गई। परन्तु कानून ने अपना काम किया और हत्यारे को फाँसी पर लटका दिया गया।

साभार

☞ पृष्ठ 5 का शेष

स्वामी श्रद्धानन्द...

स्वतंत्र देखना और करना चाहते हो तो स्वयं सदाचार की मूर्ति बनकर अपनी संतानों के लिये सदाचार की बुनियाद रख दो। याद रखिये जब देश में सदाचारी ब्रह्मचारी शिक्षक होंगे, और शिक्षा भी राष्ट्रीय ही होगी तभी तो राष्ट्र की जरूरतें पूरी होंगी। नहीं तो यदि इसी तरह आपकी संतान विदेशी विचारों, संस्कृति और सभ्यता को ढोती रहेंगी तो गुलामी कैसे दूर होगी?'

उस देश के देशी–विदेशी समाचार पत्रों ने भी स्वामी जी के इस भावपूर्ण अद्भुत भाषण को शिक्षा, सदाचार, सभ्यता और सदाचार जैसे आदर्श विचारों को अपूर्व तथा प्रेरणास्पद कहा। मं, गांधी ने 'यंग इण्डिया' में लिखाः– 'स्वागत समिति के अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द जी का भाषण उच्चता, पवित्रता, गम्भीरता और सच्चाई का श्रेष्ठतम नमूना था। बम्बई के तत्कालीन प्रसिद्ध पत्र 'इण्डियन सोशल रिफार्मर' ने लिखाः– 'अमृतसर कांग्रेस में सबको ही सहसा अपनी और खींचने और प्रभावित करने वाले महान व्यक्तित्व के धनी स्वामी श्रद्धानन्द थे। काषाय वस्त्रों के वेश में वह विशाल, ओजस्वी तथा प्रभावशाली व्यक्तित्व जिसका मुख मण्डल स्वर्गोपम तेज से देदीप्यमान था, वह चमत्कारी पुरुष उस संगठन के छोटे से छोटे कार्य का स्वयं निरीक्षण करते हुए यत्र तत्र सर्वत्र दिखाई पड़ते थे। उनके अद्भुत शिक्षाप्रद भाषण को वर्षों तक याद किया जायेगा।

स्वामी श्रद्धानन्द का नाम होठों पर आते ही उन्हें केवल एक धार्मिक सुधारवादी नेता या फिर गुरूकुल के संस्थापक के रूप में ही विशेष रूप से देखा जा सकता है। स्वामी जी के प्रारम्भिक जीवन पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट होता है कि तरुणाई के चढ़ाव से लेकर यौवन के उतार तक बड़ा ही अव्यवस्थित तथा संशयात्मक रहा। लेकिन यथा समय उन्होंने अपने चरित्र से यह सिद्ध कर दिया कि यौवन में भोग विलास का सम्पन्न जीवन बिताने वाला व्यक्ति भी ब्रह्मचर्य का उद्धारक महात्मा और संन्यासी बन सकता है। तहसीलदारी में प्रवेश करने वाला व्यक्ति भी सत्याग्रही बनकर जेल जा सकता है। सर्वथा निरंकुश जीवन बिताने वाला भी धार्मिक दृष्टि से जनता का मागदर्शक बन सकता है। युवावस्था की लहर में बहकर और विलासिता के अन्ध कूप में डूबने वाला व्यक्ति भी महान संयमी, त्यागी तपस्वी और दृढ़व्रती बन सकता है। स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का यही सार है।

स्वामी श्रद्धानन्द की कार्य प्रणाली से किसी को मतभेद हो सकता है। किन्तु उनका राष्ट्रप्रेम, भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी निष्ठा तथा हिन्दी के प्रति उनका लगाव स्वयं सिद्ध है। उनकी भावना चाँदनी की तरह उज्ज्वल तथा गंगाजल की भांति निर्मल थी। वे आर्य जाति की शान थे। दलित समुदायों के उद्धारक थे। हिन्दू मुसलमान एकता के मसीहा थे। आजादी की तड़प उन्हें बैचेन करती थी। अशिक्षा तथा अछूत समस्या उनके मस्तिष्क को झकझोरती थी।

जब स्वामी जी भयानक बीमारी से ग्रस्त थे, दुर्बल अवस्था में बिस्तर पर लेटे हुए थे, तभी 23 दिसम्बर 1926 को एक मतान्ध मुसलमान अब्दुल रशीद ने पिस्तौल से उनकी हत्या कर उन्हें शहीद कर दिया। यह अनहोनी खबर सुनकर दिल्ली शोक सागर में डूब गई। स्वामी जी के निधन पर म. गांधी ने अपने भावभरी श्रद्धांजलि में कहा थाः "दुनिया में ऐसे तो बहुत से लोग हुए जिनका जीवन तो शहीदों का था, लेकिन मौत साधारण थी। ऐसे भी बहुत से व्यक्ति हुए जिनका जीवन तो साधारण था, पर मौत शहीदों जैसी थी। लेकिन स्वामी श्रद्धानन्द जी का तो जीवन भी शहीदों का था और मृत्यु भी शहीदों जैसी थी, भला ऐसी महान आत्मा को कौन अपनी श्रद्धा भक्ति व्यक्त न करेगा?

किसी कवि ने तो स्वामी श्रद्धानन्द की मृत्यु शय्या से यह ध्वनि भी सुनी – जिसे उन्होंने इन शब्दों में व्यक्त किया हैः– वह ध्वनि यह थी

"सर देके राहे कौम में ऐसा मजा मिला।

हसरत ये बाकी रह गई–कोई और सर न था।।"

24/4 बिशन स्वरूप कालोनी
पानीपत–132103
दूरभाष : 0180–2643700

www.thearyasamaj.org

महात्मा आनन्द स्वामी विषयक मेरे संस्मरण

● डा. देवेन्द्र नाथ गढोक

जब मैं 1947 से 1995 तक दिल्ली में था तो भाग्य ने मुझे आनन्द स्वामी जी के दर्शन और उनके साथ वार्तालाप का अवसर प्रदान हुआ, विशेषकर पंडारा रोड, नई दिल्ली जो एक सरकारी अफसरों की कालोनी थी। स्वामी जी जब भी दिल्ली में आते थे तो हाँडा परिवार के पास पंडारा रोड में रहते थे। आर्य समाज, पंडारा रोड 1962 में आनन्द स्वामी जी के कर कमलों से स्थापित हुई थी। श्री राजा राम कजला (Registrar Supreme Court) उसके प्रधान बने और मैं मंत्री! 1962 से आर्य समाज काफी लोकप्रिय हो गई कई विद्वान साप्ताहिक सत्संग में जाते थे, आनन्द स्वामी जी जब दिल्ली में जाते तो पंडारा रोड आर्य समाज में अवश्य आते।

एक बार जब आनन्द स्वामी जी पंडारा रोड आये उस समय सरकारी कार्यालयों में तीन छुट्टियाँ थीं। मेरा परिवार हाँडा जी के घर प्रतिदिन हवन करने तथा स्वामीजी के वचन सुनने जाते थे। मैंने स्वामी जी से कहा अगर आप इस तीन दिनों की यहां हैं तो क्यों न आप का लाभ उठाया जाये! स्वामी जी हंसकर बोले "तुम आर्यसमाजी अपना फायदा ही ढूँढ़ते हो। बताओ क्या करवाना चाहते हो! मैंने कहा और कुछ नहीं, जो तीन छुट्टियाँ आ रही हैं इनमें जाप का प्रवचन! स्वामी जी ने कहा "मेरा अभी प्रोग्राम कुछ दिन दिल्ली में ही रहने का है, प्रवचन कहाँ करना होगा। पंडारा रोग सामुदायिक भवन के साथ बहुत बड़ा मै दान है, वहाँ!

यह निर्णय हुआ कि सांय 6½ बजे से 7 बजे तक भजन फिर 7 बजे से स्वामीजी का प्रवचन! जब मैं संसद भवन गया मैंने हिन्दी पत्रों–नवभारत तथा हिन्दी हिन्दुस्तान के पत्रकारों को बुला कर कहा "आनन्द स्वामी जी तीन दिन, पंडारा रोड कम्युनिटी हाल में 7 बजे से प्रवचन देंगे, यह अपने पत्र के Engagement Column में दे देना।

पहले दिन जब मैं संसद भवन से आया तो सीधा कम्युनिटी हाल गया। वहां देखकर हैरान हो गया कि 150–200 स्त्री पुरुष वहां 5½ बजे से ही बैठे हुए हैं। उनसे पूछा तो पता चला कि वे लोधी रोड कोटला और लाजपत नगर से आये थे। मैंने अपने साथियों को बुलाकर कहा, जो आप ने दरी आदि बिछाई है वह तो इन लोगों ने घेर ली है, पंडारा रोड के वासी कहां बैठेंगे ? एक दम से जिस के घर दरी या कारपेट था सब ले जाकर आ गए।

मैं एक कालीन पर बैठ गया और दो चार स्त्री पुरुषों को अपने विषय में बताया तथा उनसे पूछा यह सूचना आप को कहाँ से मिली ? उन्होंने कहा आर्य समाज के अधिकारियों ने घर घर सूचना दी है। उन में एक बुजुर्ग मेरे पास आकर कहने लगे "आप जानते नहीं, आनन्द स्वामी जी को उत्तर भारत का स्वामी दयानन्द कहा जाता है। हमारी समाज में स्वामी जी के बड़े–बड़े चित्र लगे हुए हैं।

यह सब सुनकर मैं मंच के पास आकर बैठ गया और ब्रह्मचारी भजनीक का तथा स्वामी जी का इन्तजार करने लगा, परन्तु मेरे मन मे एक डर था क्या पर इतनी भीड़ स्वामी जी को आराम से सुनेगी। इतने लोग आ गए थे, परन्तु वह सब जहाँ जगह मिली वहां ही बैठ गए, स्त्री पुरुष दीवार पर तथा सड़क तक खड़े थे।

प्रभु कृपा से भजन और स्वामी जी का प्रवचन में जनता ने निस्स्तब्ध होकर सुना। मैं भी स्वामी जी का प्रवचन समाप्त होने पर, स्वामी जी का तथा लोगों का धन्यवाद करके घर चला गया परन्तु अभी बैठा ही था कि Traffic Inspector तथा दो Traffic Constables मेरे यहां आ गए। मन में डरने लगा क्या कुछ गलत तो नहीं हो गया। परन्तु वह Inspector बड़े प्यार और अदब से मेरे बारे पूछने लगा और कहा स्वामी जी जब भी दिल्ली में आते हैं और इन का ऐसा प्रोग्राम होता है तो पुलिस को अवश्य किया जाता है। आप जानत नहीं इण्डिया गेट तक ट्रैफिक जाम है, गाड़ियाँ ही गाडियाँ खड़ी हैं, हमें तो ट्रैफिक जाम की सूचना टेलीफोन पर किसी ने दी। हमने आकर ट्रैफिक को सम्भाला! आप से एक विनती है, जब भी स्वामीजी का ऐसा प्रोग्राम हो तो पुलिस को जरूर सूचित करें। स्वामी जी बहुत ही लोकप्रिय हैं। आप अब चिन्ता न करना हम लोग अब पूरा इन्तजाम करेंगे, बाकी दिनों का। जयहिन्द कह कर गए तो मेरे परिवार ने और मैंने चैन की सांस ली। तीन दिन आनन्द स्वामी के प्रवचन तथा भजन आदि, अच्छा रहा। यह घटना 1964–65 की होगी। मैं अब भी सोचता हूँ, क्या आर्यसमाज को आनन्द स्वामी जैसा आज के युग में कोई स्वामी दयानन्द मिल सकता है। जिसके प्रवचनों में मिठास, ज्ञान तथा हंसी आदि है।

ए–5/103, आक्सफोर्ड विलेज,
पूर्णे–411040

☞ पृष्ठ 6 का शेष

ऋषिका सूर्यासावित्री...

और रस" षट्क सम्पदा पूर्ण धर्मक्षेत्र के रूप में सक्रिय बना रहता है।

आइए, अब छहों दिशाओं की प्रदक्षिणा करके ऋषिका सावित्रीपूर्ण द्वारा निर्दिष्ट देवता का सान्निध्य प्राप्त करें। अथर्ववेद के इस सम्पूर्ण काण्ड का देवता–पति–पत्नी दोनों से मिलकर बनने वाली एक संज्ञा 'दम्पति' है। सृष्टि के आदि में अमैथुनी प्रजा के सृजन का स्रोत तो स्वयं परमात्मा होता है, उपरान्त मैथुनी सन्तति सृजन की आत्मा यही दम्पति होते हैं। दम्पति से ही परिवार का रूप बनता है। व्यक्ति समाज की इकाई हो सकता है, किन्तु राष्ट्र की इकाई परिवार ही होता है। भारतीय उपमहाद्वीप के दर्शन एवं पश्चिम के प्रदर्शन में परिवार स्वरूप में बड़ा अन्तर है। पश्चिम में जहाँ पति–पत्नी एवं सन्तान परिवार के अंग होते हैं, वे भी कुछ समय बाद छिन्न–भिन्न हो जाते हैं। बड़े होकर सनतान कहीं और माता का पति कोई ओर, पिता की पत्नी कोई और, सब और ही और अपनत्व का कोई ठौर नहीं रहता। भारतीय परिवार की शृंखला कभी टूटती नहीं। यहाँ माता–पिता–आचार्य–अतिथि, कुलसपूत तथा कुलवधू इन छहों के संयुक्त रहने की परिपाटी सदैव सुदृढ़ रहती है। भले ही पीढ़ियाँ बदलती रहें, किन्तु पंचायतन पूजा के देवता सदैव विराजमान रहते हैं। भारतवासी जब पश्चिम को अपना आदर्श मानकर चलेंगे तो पूर्व का सूरज धूप तो दे सकता है किन्तु शाश्वत संस्कार नहीं। अब तो पश्चिम की धूल सूर्य को धूसरित करती प्रतीत होती है।

दैनिक हिन्दुस्तान (1.10.13) का "मनसा वाचा कर्मणा" का सन्देश दृष्टव्य है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मनोचिकित्सक जोश बर्टोलोट के अनुसार घर–परिवार और सामाजिक बन्धन दवाओं से उत्तम सिद्ध होते हैं, जो नवजीवन दे जाते हैं। परिवार व्यक्ति को उत्तरदायी, सफल तथा आपदा से लड़ने की शक्ति देते हैं। थामस मूर कहते हैं कि पारिवारिक जीवन उतार–चढ़ाव से भरपूर होता है, सुख, दुःख, सफलता एवं असफलता आदि इस तरह के चरित्र इसकी यात्रा में जीवन से गुजरते हैं। आत्मा के पोषण के लिए इससे उत्तम कुछ नहीं हो सकता। कैलीफोर्निया में हुए एक शोध के अनुसार जिन लोगों का पारिवारिक या सामाजिक जुड़ाव कम होता है, उनमें हृदय रोग, रक्त संचरण के खतरे बढ़ जाते हैं। पेंसिल्वेनिया के कारनेगी रिसर्च थैलिनयूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने बताया कि जिन लोगों के पारिवारिक बन्धन सुदृढ़ होते हैं वे बीमारियों से दूर रहकर अधिक स्वस्थ रहते हैं। सद्भावना ये प्रायः परिवार की संगति में ही पनपती हैं परिवार की एकजुटता ने मैडम हेलन केलर को ऐसी दृढ़ता प्रदान की कि उन्होंने विकलांगता के रहते हुए भी पूरी दूनिया को अपनी सफलता से चकित कर दिया। मनोविज्ञानी लारा किंग कहती हैं कि परिवार के बढ़ते रिश्ते जीवन के सुखद बदलाव हैं जो हर्ष के साथ साथ हमें उन्नति की ओर अग्रसर करते हैं। परिवार में सदैव एक प्रेरणा छिपी रहती है जो घर के सदस्यों के अच्छे कार्यों के साथ ही सफलता की सीढ़ियों को चढ़ने के लिए प्रेरित करती है। यही नहीं सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने वाला व्यक्ति जानता है कि किसी कारण से वह फिसला तो परिवार उसे थाम लेगा और नवजीवन देकर लक्ष्य तक पहुँचने के लिए नया मार्ग दिखायेगा।

आदि गुरु शंकराचार्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द ही क्या भारत के अनेकशः महापुरुष विवाह के प्रवाह में भले ही न बहे हों, किन्तु परिवार के प्यार व संस्कार ने ही उन्हें मानवता का सरताज बनाया, और उन्होंने अपने विशाल दृष्टिकोण से सम्पूर्ण विश्व मानवता को ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का मार्ग दर्शन कराया। प्रस्तुत मन्त्रानुसार प्रभु या गुरु से प्राप्त यह वेद–बोध विद्वानों द्वारा बिना किसी भेदभाव के राष्ट्रवर्ती प्रजाजन में निरन्तर प्रसारित किया जाता रहना चाहिए।

– 'वरेण्यम' अवन्तिका प्रथम, रामघाट मार्ग,
अलीगढ़–202001 (उ.प्र.)

अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

● डॉ. अशोक आर्य मण्डी डबवाली

महान् पुरुष अपने महान् कार्यों के पद चिह्न सदा समय की धूलि पर छोड़ जाते हैं। इन्हीं चिन्हों को देखकर उनके अनुगामी अपना मार्ग बनाते हैं। ऐसे ही महान् पुरुषों में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने फाल्गुन वदी 25सं. 1113 वि. सन् 1756 ई. को पंजाब के जिला तलवन के लाला नानकचन्द के यहाँ बृहस्पति नाम से जन्म लिया। यही बालक महात्मा मुन्शीराम के नाम से कार्यक्षेत्र में आया।

मुन्शीराम के पिता सरकारी कर्मचारी होने के कारण विभिन्न स्थानों पर बदलते रहते थे। इस कारण इस कुशाग्रबुद्धि बालक की शिक्षा बाधित रही। जब अध्यापक इनके भाईयों को पढ़ा रहा होता था, उसे सुनकर ही आप बहुत कुछ सीख जाते थे। ऐसी तीव्र मेधा वाले बालक ने एक दिन वकालत पास कर अनेक अविस्मरणीय केसों में विजय प्राप्त की।

आप आरम्भ से ही धर्म प्रेमी होते हुए भी तत्कालीन प्रचलित ढोंगों व गन्दे आचरण को देखकर धर्म से तब तक विमुख रहे जब तक ''उस समय अनोखा जादूगर'' कहे जाने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यान नहीं सुने। महर्षि को देख व सुनकर तो आप पूरी तरह से इनको समर्पित हो गए तथा पूरी दिनचर्या में स्वामी जी का साथ देने लगे। महर्षि से इस प्रकार के सम्बन्धों को देख अंग्रेज हाकिम तिलमिलाए किन्तु मुन्शीराम ने कभी इस बात की चिन्ता नहीं की। बरेली में जो महर्षि से 'ओ३म्' की चर्चा सुनी, इस से आप के विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन आ गया। धीरे-धीरे ब्रह्म समाज तथा सर्वहितकारिणी सभा के भी सम्पर्क में आए किन्तु आर्य समाज सरीखी शान्ति आपको कहीं से न मिली। महर्षि के विचारों से प्रभावित होने पर आपने सत्यार्थप्रकाश व ऋषिकृत अन्य ग्रन्थों का अध्ययन कर वृद्ध सिद्धान्तों को अपना कर अपने आप को आर्य समाज के कठोर साँचे में ढाल लिया। स्वयं आर्य समाज के सदस्य बनकर हृदय में धैर्य को धारण किया।

मुन्शीराम जी वैदिक सिद्धान्तों पर इतने पक्के हो गए कि पिता जी के विशेष आग्रह पर भी निर्जला एकादशी का व्रत नहीं रखा किन्तु पिता जी की सेवा तथा आर्थिक सहायता में सदैव तत्पर रहे। बाद में पिता जी भी वैदिक सिद्धान्तों को समझने लगे। उनकी मृत्यु पर उनका दाह संस्कार भी वैदिक रीति से किया। मुन्शीराम जी की बढ़ती लोकप्रियता से पौराणिक पण्डितों में खलबली मच गई। उन्होंने शास्त्रार्थ के लिए ललकारा, गुण्डागर्दी का प्रयास किया किन्तु नित्य कठोर व्यायाम करने वाले मुन्शीराम के सामने आने की कभी हिम्मत नहीं हुई। जाति बहिष्कार का भय भी तब भाग गया जब मुन्शीराम जी ने सत्य सब के सामने ला दिया। लाला देवराज जी का समर्थन व सहयोग आपको सदा मिलता रहता था। उनका कथन था कि ''कोई भी ढोंगी व्यक्ति कभी भी सुधारोन्मुखी व्यक्ति का बाल भी बाँका नहीं कर सकता।'' आपके प्रभाव से ईसाईयों का प्रभाव भी फीका पड़ने लगा।

आपने देखा कि सर्वहितकारी कार्यों में आर्थिक कठिनाई आ रही है। इसे दूर करने के लिए आपने आटा रद्दी फण्ड आरम्भ किया। लोगों से अपील की कि प्रत्येक व्यक्ति अपने घर पर एक घड़ा रखे जिसमें एक मुठ्ठी आटा प्रतिदिन डाले तथा रद्दी अखबार भी एकत्रित करके रखे। बाद में वह इसे सर्वहितकारी कार्यों के लिए दान करे। इससे आपको प्राप्त भारी धन से आपने अछूतोद्धार व अन्य जन हितकारी कार्यों को आगे बढ़ाया तथा अब से अपना पूरा समय आर्य समाज के कार्यों को देने लगे।

आप पायनियर व ट्रिब्यून के नियमित पाठक थे। इस कारण राष्ट्रीय भावनाओं को भी बल मिला। अतः आप ने गांधी जी के अफ्रीका सत्याग्रह के अवसर पर सहयोग हेतु उन्हें धन भेज कर सहायता की तथा बाद में कांग्रेस के मार्ग पर चलने लगे। आपने प्रत्येक जिले में कांग्रेश कमेटी स्थापित की जालन्धर व होशियारपुर से आपको भारी सहयोग मिला। इस अवसर पर सर सैय्यद अहमद खां का विरोध भी आपके कदम रोक न सका। पंजाब में मार्शल ला लगा, चाहे रोलेट एक्ट विरोधी आन्दोलन या दिल्ली में कोई कांग्रेस का आन्दोलन हुआ, आप सर्वदा सर्वमान्य नेता स्वरूप अग्रणी दिखाई दिए। देहली में जब अंग्रेजी सेना ने निहत्थे लोगों पर गोली चलाने की तैयारी की तो आपने संगीनों के आगे अपना सीना तान कर कहा ''निर्दोष जनता पर गोली चलाने से पहले मेरी छाती में संगीन घोंप दो।''

आप जानते थे कि समाज सुधारने के लिए पहले अपना घर सुधारना आवश्यक है। अतः स्त्री शिक्षा का नारा लगाने से पहले अपनी पत्नी को शिक्षित किया। उसका घूँघट हटवाया, सैर करते समय उसे साथ ले जाने लगे। इस प्रकार स्त्री को समान अधिकार दिए। एक दिन ईसाई स्कूल से पढ़कर लौटी बेटी गा रही थी,

''एकबार ईसा बोल, तेरा क्या घटेगा मोल, ईसा मेरा राम रमैया, ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।''

यह सुनकर मुन्शीराम जी के हृदय में चोट लगी तथा तत्काल लाला देवराज जी के सहयोग से एक अपील की, जिससे प्राप्त धन से 1148 वि. को जालन्धर में कन्या महाविद्यालय के नाम से विख्यात आज भी स्त्री शिक्षा की अग्रणी संस्था है। इसी से आपका जन्म का नाम ''बृहस्पति'' सार्थक हुआ।

आपने प्रचारार्थ एक समाचार पत्र की आवश्यकता अनुभव की। अतः शीघ्र ही साथियों के सहयोग से ''सद्धर्म प्रचारक'' उर्दू पत्र आरम्भ किया। आप ने उर्दू भाषा भी हिन्दी जैसी बना दी। चाहे मुसलमानों ने इसका विरोध किया किन्तु बाद में अन्यों ने भी आप ही का अनुसरण किया। इस शोधित उर्दू में संस्कृत के शब्द अधिक होते थे। इसे आर्यसमाजी उर्दू कहा जाने लगा। बाद में यह पत्रिका हिन्दी में प्रकाशित होने लगी। इससे आर्य समाज के प्रचार को तीव्र गति मिली। इसी से ही राहू केतू का खण्डन करने वाले पहलवान् चिरंजी लाल सरीखे सहयोगी मिले। आपने मन्दिरों के अनुचित प्रयोग का सदा विरोध किया तथा सर्वप्रियता के लिए कभी नाम पट्ट की इच्छा नहीं की। सभी प्रकार की एषणाओं से सदा दूर रहे। यदि कार्यक्षेत्र में कभी संस्था के अधिकारी आड़े आए तो उनकी भी परवाह नहीं की। इस कारण आपकी धर्मवीर पण्डित लेखराम व पण्डित गुरूदत्त विद्यार्थी जी से अत्यधिक घनिष्टता थी। आप स्वाध्याय व धर्म प्रचार के स्रोत थे।

इस कारण आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने तो शास्त्रार्थों की खूब धूम रही। आप नवयुवकों के लिए उत्साह व साहस का स्रोत थे। जब आप की पत्नी का देहान्त हुआ। तो आपने चारों बच्चों की देख रेख का भार अपने भाई के कन्धों पर डाल दिया तथा स्वयं वेद प्रचार व अन्य सार्वजनिक कार्यों में पूरा समय देने लगे।

मुंशीराम ने मांस भक्षण का खूब विरोध किया। सत्य सिद्धान्तों पर चलते समय कभी कष्टों की या विरोध की चिन्ता नहीं की। डी.ए.वी. आन्दोलन में कमियों को देख, विशेषरूप से संस्कृत शिक्षण की कमी के कारण पं. लेखराम, स्वामी पूर्णानन्द आदि के सहयोग से वैदिक शिक्षणालय खोलने का निर्णय लिया, जिस हेतु चार वर्ष तक निरन्तर कार्य किया। आपने इसमें आश्रम-पद्धति, गुरूकुल हेतु तीस सहस्र का स्थापना कोष स्थापित किया तथा नगर से काफी दूर जंगली क्षेत्र में हरिद्वार के पास कांगड़ी नामकस्थान पर गुरूकुल की स्थापना की, जो आज विश्व विद्यालय बन गया है। विश्व भर का समुदाय यहाँ शिक्षा प्राप्त कर रहा है। इस हेतु सरकारी सहायता की कभी कोई माँग नहीं की गई।

आप की कार्य शैली तथा गुरूकुल की स्वतन्त्र शिक्षा पद्धति के कारण आपको कई कठिन परीक्षाओं का सामना करना पड़ा, जैसे गुरूकुल के ब्रह्मचारियों को धनुर्विद्या व घुड़सवारी की शिक्षा देने के प्रावधान से सरकार की क्रूर दृष्टि व सन्देह बढ़ गया। लाला लाजपत राय के निर्वासन पर तथा सरकारी नौकरी के समय भी निर्भीक व्यवहार के कारण आप पर सरकार का सन्देह बढ़ता ही गया किन्तु आपने कभी चिन्ता नहीं की।

पटियाला में आर्यों पर विद्रोह के आरोप में सभी आर्य समाजियों को गिरफ्तार किया जाने लगा। आपने आगे आ कर उनके लिए मुकद्दमा लड़ा तथा उन्हें सम्मान पूर्वक बरी करवाया।

इस प्रकार पन्द्रह वर्ष पर्यन्त निरन्तर समाज सेवा के पश्चात् आपने संन्यास दीक्षा ली तथा श्रद्धानन्द नाम से विख्यात् हुए। आपने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति दान कर दी तथा घर छोड़ अब देहली को केन्द्र बना लिया। जो देहली राजधानी होते हुए भी पिछड़ी हुई थी उसे समय की धारा के साथ जोड़ दिया।

आपने जामा मस्जिद दिल्ली के पवित्र मंच से वेद मन्त्रों से एकता का सन्देश दिया। मुसलमान आपके दीवाने हो कर आपकी रक्षा करना अपना कर्तव्य समझने लगे। असहयोग आन्दोलन में खूब कार्य किया। जलियांवाला बाग काण्ड के बाद जब चालीस हजार लोग जेलों में थे, मार्शल ला लगा हुआ था, जब कांग्रेस का महाधिवेशन अमृतसर में करने का निर्णय हुआ, ऐसे भयानक अवसर पर आपने पंजाब में आकर लोगों का साहस बढ़ाया। स्वयं स्वागत समिति के प्रधान बने यह पहला अवसर था जब किसी संन्यासी ने यह पद सँम्भाला।

आप अछूतोद्धार के तो मसीहा थे। कांग्रेस से नागपुर अधिवेशन में एतदर्थ एक प्रस्ताव भी पेश किया। यह कार्य छोड़ने हेतु ईसाईयों का दिया गया प्रलोभन भी आपको रोक न सका

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

www.thearyasamaj.org

पत्र/कविता

सत्यमेवजयते, नानृतम्

विजय सत्य की ही होती है, नही असत जय पाता है।
गौरव मय इतिहास हमारा, सुयश सत्य के गाता है।।

त्रेता में दुर्नृप रावण ने जब आतंक मचाया था।
ऋषि-मुनियों के यज्ञ भ्रष्ट कर उनको बहुत सताया था।।

उनके आश्रम नष्ट-भ्रष्ट करवाता, उनका गौधन हर।
उन्हें अकारण, घोर ताड़ना देता, कर देता बेघर।।

तब उनके उद्धार हेतु कर उठा धनुर्धर रघुवर ने।
''निशिचर हीन करो महि'' का व्रत धारण कर उस नरवर ने।।

सैन्य शक्ति कम थी यद्यपि,पर सत्य न्याय का सम्बल था।
उन्हें मिला सुग्रीव, नील, नल, हनुमत आदिन का बल था।।

बिनु प्रयास के इन सबका बल मिलना यह दर्शाता है।
विजय सत्य की करने के अवसर खुद ईश जुटाता है।।

सीता हरण बना था कारण प्रबल नाश का रावण के।
ये भी था संयोग अचानक बना पक्ष में रघुवर के।।

इसके पीछे 'न्याय व्यवस्था' रत थी ईश्वर पावन की।
''सत्यमेव जयते, नानृतं'' के वचनामृत के रक्षण की।।

बढ़ा राम का दल, रावण को दल बल, कुटुम्ब सहित मारा।
सत्य धर्म की रक्षा की, अन्याय-अधर्म मिटा सारा।।

विजय सत्य की ही होती है, नहीं आनृत जय पाता है।
अन्यायी, अत्याचारी मिटता, धिक्कारा जाता है।।

नहीं सहो अन्याय, अनृत को कभी न गले लगाओ।
''सत्यमेव जयते, नानृतं'' को जीवन लक्ष्य बनाओ।।

जो सत्, धर्म, न्याय पे चलता, जग उसके गुणगाता है।
'राम विजय' का पर्व 'दशहरा'-शाश्वत नीति बताता है।।

दयाशंकर गोयल,
सुदामा नगर इंदौर

मथुरा का विरजानन्द स्मारक : जैसा मैंने देखा

मैंने एक दिसम्बर 2013 ई को उपरोक्त स्मारक देखा। इसका उद्घाटन तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 1959 ई. में किया था और तत्कालीन उपराष्ट्रपति जत्ती जी ने इस के अनुसंधान केन्द्र का उद्घाटन 1973 ई. में किया था। यह स्मारक मथुरा के छत्ता बाजार में बना हुआ है। स्मारक अति सुन्दर व आकर्षक है। इसका क्षेत्रफल लगभग 40 वर्ग गज है। यह वहीं बनाया गया है जिस कुटिया/मकान में विरजानन्द जी वेद तथा आर्ष ग्रन्थ पढ़ाते थे। महर्षि दयानन्द ने यहीं गुरुवर विरजानन्द से शिक्षा पाई थी।

भूतल पर कमरे में 17 फोटो लगे हैं। शोकेस में चारों वेद तथा सत्यार्थप्रकाश रखा है। शोकेस पर दान पात्र भी रखा है। बाईं ओर दोनों उद्घाटनों के पत्थर लगे हुए हैं जो ऊपर नीचे हैं। बाहर तीन फुट का बारजा/ छज्जा भी है। कमरे का आकार लगभग 12फीट x15 फीट है। दरियां-चादरें भी बिछी हैं। एक-दो तख्त भी हैं। सबसे ऊपरी मंजिल की छत पर सुन्दर यज्ञ शाला है।

स्मारक के बाहर गोल गप्पे बेचने वाले से वार्ता की। उसने बताया कि अब यहां कोई भी नहीं रहता है। यह दोपहर 12 बजे से रात को 8 बजे तक खुला रहता है। कभी-कभी कोई सज्जन थोड़ी देर के लिए आते हैं। ऊपर कमरे में शोकेस में आर्य समाज की पुस्तकें धूल-मिट्टी से अटी पड़ी हैं। ऐसा दृश्य देखकर घोर निराशा, दुःख व आश्चर्य हुआ। पहले इसी स्मारक में कार्यक्रम समय-समय पर होते थे और चहल-पहल रहती थी।

सुझाव

आर्य प्रतिनिधि सभा 5, मीराबाई मार्ग, लखनऊ, द्वारा यह स्मारक बनवाया गया था, जो सराहनीय कार्य है। अब भूतल पर आर्य साहित्य विक्रय केन्द्र तथा ऊपर के कमरों में आर्य पुरोहित/उपदेशक/प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र खुलवाकर कमरों का सदुपयोग किया जाए। यज्ञ शाला में समय-समय पर हवन भी किया जाए। आज भी मथुरा में सनातन धर्म का बहुत जोर है जबकि वैदिक धर्मी आपस में लड़ झगड़ रहे हैं। गुरुवर विरजानन्द और महर्षि दयानन्द के वीर सैनिकों से मेरा निवेदन है कि आर्य समाज का प्रचार करने के लिए संगठित होकर मतभेद भुलाकर कार्य करो।

इन्द्र देव
18/186, टीचर्स कॉलोनी,
बुलंदशहर मो. 08958778443

ईश्वर से सच्ची लगन लगाये

'आर्य जगत' पेपर बहुत ही अच्छा लगता है इसमें कितने ही सारगर्भित लेख होते हैं जो हमें विविध प्रकार का ज्ञान देते हैं।

सोनालाल नेमधारी जी से प्रार्थना है कि मोरशिस में हिन्दी को ही बढ़ावा दें, अन्य भाषाएं तो समय के साथ सब सीख लेते हैं।

''प्रतिमाओं की धमकी, प्रतिमाओं में चमकी'' देवनारायण भारद्वाज का लेख बहुत सुन्दर लगा।

जो लोग आर्य समाज के महान शिल्पी रहे उनके परिवारों के बारे में कुछ जानने को मिले कि उनके सदस्यों में आज भी वह तप, त्याग, लगन है जो हमें मार्ग दिखाए। ईश्वर की दया और गुरुदेव दयानन्द का आशीर्वाद हम समाजियों को सच्ची लगन लगाये।

-गौरी जंगपुरा, दिल्ली

****

जो संयम से रहता है वही सुखी रहता है।

सन्ध्या हवन के बाद आनन्द स्वामी जी ने अपने प्रवचन में चार 'स' अपनाने का उपदेश दिया। पहले 'स' से सन्ध्या करना, दूसरे 'स' स्वाध्याय करना, तीसरे 'स' से सत्संग में जाना, चौथे 'स' से सेवा करने की प्रेरणा दी। मैं इसमें पाँचवा 'स' और जोड़ना चहाता हूँ जिससे संयम बनता है। जो संयम से रहता है वह सुखी रहता है। जो मात्र इन्द्रियों का दास बनकर रहता है वह दुखी रहता है। बिना संयम के जीवन ऐसा है जैसे बिना ब्रेक की गाडी। जिस गाड़ी में ब्रेक नही है वह कहीं भी दुर्घटना ग्रस्त हो सकती है। अतः जीवन में संयम का होना भी बहुत आवश्यक है।

देवराज आर्य मित्र
हरी नगर, नई दिल्ली-64

****

www.thearyasamaj.org

हिन्दि की स्थिति का बदलता परिदृश्य

● हरिकृष्ण निगम

भला हो महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना का मराठी भाषा में सार्वजनिक स्थानों, कालेजों, स्कूलों, बैंकों, दुकानों और शापिंग मॉल आदि पर नामपट लगाने के हाल के अभिमान का। शायद वे कभी नही समझेंगे कि हिन्दी व देवनागरी के देशभर के प्रेमी अन्दर ही अन्दर इससे कितने प्रसन्न हैं। वैसे भी पहले ही मुम्बई में देवनागरी लिपि में मराठी का प्रयोग दशकों से हो रहा है। विशेषकर उत्तर भारतीयों को यह स्थान आने के साथ उनको अपना घर जैसा लगता था। स्वाभाविक रूप से उनके सपनों का दुबई मुम्बई को ही बनना था क्योंकि जहाँ उत्तर प्रदेश व बिहार में चाहे रेलवे स्टेशन हों या दूसरे सार्वजनिक स्थान हिन्दी और अंग्रेज़ी के साथ-साथ उर्दू का सरकारी प्रयोग दशकों से वहाँ सामान्य बात थी। पर उन्हें पहली दृष्टि में ही लगता था जैसे मुम्बई उनके स्वागत में बाहें फैलाए है।

मुम्बई में प्रवेश करते ही सबसे पहले चाहे वह पश्चिम रेलवे का चर्चगेट, मुम्बई सेन्ट्रल या कोई भी लोकल स्टेशन हो अथवा मध्य रेलवे का छत्रपति शिवाजी टर्मिनस अथवा कोई दूसरा स्टेशन वह विस्मित हुए बिना नहीं रहता है कि रेल के हर स्टेशन पर वही वह नाम बड़े अक्षरों में हिन्दी में दो बार क्यों लिखा जाता है? उसको कदाचित कोई नहीं बतलाता है कि देवनागरी की यह दोहरी घुट्टी इसलिए पिलाई जा रही है कि उसमें से एक मराठी है, दूसरी हिन्दी! वर्णमाला वही, आद्याक्षर वही, वर्तनी वही, शब्द वही, उच्चारण वही। सिर्फ कहीं कहीं एक दो वर्णो के विभेद से हम एक को मराठी लिपि कहते है दूसरे को हिन्दी। राजनीति को भूलकर भाषायी समरसता के इस केन्द्र बिन्दु के लिए आप स्वयं की ओर से या हिन्दी प्रेमियों की ओर से इस आन्दोलन के प्रति यदि आभार प्रकट करें अधिक साभिप्राय होगा।

भाषाशास्त्रियों द्वारा हिन्दी को सहज, सरल, बोधगम्य एवं वैज्ञानिक कहने का एक प्रमुख कारण मानक वर्तनी एवं इसके पूरी तरह व्यवस्थित उच्चारण की वजह से है। इसकी वर्णमाला एवं वर्तनी दोनों ध्वन्यात्मक है और फोनेटिक दृष्टि से अन्तराष्ट्रीय भाषाओं में सर्वाधिक तर्कसम्मत है। जैसा लिखा जाता है वैसे ही बोला जाता है।

अंग्रेजी की नियमविहीन व भ्रमित करने वाली 'आर्थोग्राफी' या वर्तनी के आधार पर उच्चारण की खामियाँ हाल में उस समय भयावह रूप से उजागर हुई जब कुछ दिनों पहले अमेरिका जाने वाले कुछ भारतीयों को उनके नाम के मुस्लिम होने के भ्रम में वहाँ के हवाई अड्डों पर उन्हे काफी तंग किया गया। कारण यह था कि उनके जातीय वर्गीकरण के आधार पर संगणकों में भरी सूचना के अनुसार उन्हें मुस्लिम समझा गया था। प्रसिद्ध भारतीय अभिनेता कमल हासन और एक दूसरे भारतीय राजा बाली को क्रमशः 'कमाल हसन' और 'रजब अली' मानकर रोका गया था क्योंकि मुस्लिम-विरोधी उफान के दौर में वहाँ हर मुस्लिम को निर्लज्जता पूर्वक शक के दायरे में रखा जा रहा था। अंग्रेज़ी के उच्चारण की इस सीमा के बारे में बहुधा चर्चा होती रहती है।

दूसरी और हिन्दी और देवनागरी लिपि की विशेषताओं के बारे में लगता है सार्वजनिक रूप से लिखने का फैशन, शायद सितम्बर माह जैसे औपचारिक अवसरों के अलावा, समाप्त हो गया है। वह S/c इसलिए कि जब राजभाषा की विशिष्टताओं को संवैधानिक प्रावधानों के दायित्व निभाने की बाध्यता के सन्दर्भ में- जैसे यह उन पर थोपी जा रही है। पर अब वार्षिक सुधारों के दौर में उन्मुक्त बाजार की प्रकृति, विफल रणनीतियों या गलाकाट प्रतिद्वंद्विता ने पुराने दुराग्रह मिटा दिए हैं। बाजार के तकाजों व नई अर्थव्यवस्था में ग्राहकों को रिझाने के लिए विस्मयजनक रूप से हिन्दी का सहारा लिया जा रहा है। अब हिन्दी राजभाषा के दायित्वों से परे मनोरंजन की दुनिया की पहल पर जन संचार माध्यमों की प्रमुख भाषा बन चुकी है। आज हिन्दी के आर्थिक पहलू को लेकर इसके प्रयोग के रास्ते का हीनता-बोध बड़े-बड़े महानगरों में भी धीरे-धीरे लुप्त हो रहा है। विज्ञापना व श्रव्य-दृश्य मीडिया में हिन्दी का अपना अर्थशास्त्र जन्म ले चुका है और इसे मुनाफे की भाषा के रूप में भी देखा जा रहा है।

जब से यूनेस्को ने 1999 में आयोजित एक महाधिवेशन में दुनिया भर में 21 फरवरी का दिन अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी और भाषा के प्रश्न को संरक्षण के संदर्भ में देखा था। हिन्दी जैसी व्यापक, नैसर्गिक भाषा के अध्ययन को उच्चस्तरीय प्रौ द्योगिकी के साथ जोड़ने और सूचना प्रबंधन की दिशा में नए प्रयास किए गए हैं। वाक अभिज्ञान के आधार पर हिन्दी के संगणकों द्वारा अनुवाद की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। अंग्रेजी-हिन्दी शब्दकोशों परस्पर संगणकों को जोड़कर आज एक सेलफोन द्वारा अनुवाद की सुविधा उपलब्ध है। हिन्दी कदाचित अब एक विशेष साफ्टवेयर के माध्यम से केवल लिपि और उसे पढ़ सकने की क्षमता की मोहताज नहीं रहेगी। भविष्य में त्वरित मशीनी अनुवाद हिन्दी की भूमिका को और अधिक व्यापक बना सकेगा। साफ है आज के बदले हुए परिदृश्य में शिक्षा पद्धति या सरकारी कामकाज अथवा निजी क्षेत्र का सेवा उपयोग सिर्फ अंग्रेज़ी में नहीं किया जा सकता है।

पर साथ ही साथ एक समानांतर दूसरी दुनिया भी है जहाँ अंग्रेज़ी आधुनिकता, चमक-दमक, समृद्ध सामाजिक स्तर व दिखावे की भाषा भी बन रही है। जो आज के समाज मे 'स्नॉब' कहलाते हैं, उन वर्गदम्भियों की झूठी शान की यह नई पहचान भी है। उनकी अंग्रेज़ी भ्रष्ट हो सकती है – स्लैंगयुक्त अथवा आज जिसे कभी-कभी 'बाबू' या 'बटलर' इंगलिश, 'जिंगलिश', 'हिंगलिश', 'इण्डिका' अथवा 'स्विच-स्वैप' खिचड़ी या वर्णसंकर-'बास्टरडाईज्ड'-भाषा या भेलपुरी इंगलिश भी कहा जाता है। जहाँ एक ओर भारत में अंग्रेज़ी के माध्यम से अनेक महत्वपूर्ण लेखकों ने यश पाया है, यह कहा जाता है, इतनी भ्रष्ट व व्याकरणविहीन अंग्रेज़ी भी इस देश में पहले कभी नहीं बोली या लिखी गई। फिर भी आज अंग्रेज़ी के पत्रकार हिन्दी के लिए 'वर्नाक्यूलर' – देशज या स्थानिक बोली शब्द प्रयुक्त करते हैं।

आज भी हमारे इर्द-गिर्द अनेक लोग मिल जाएंगे जो कहेंगे कि हिन्दी की अपेक्षा भारत के विकास के लिए अंगेज़ी जरूरी है। हमारे प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने स्वयं कुछ दिनों पहले कैम्ब्रिज में जब उन्हें मानंद डाक्टरेट प्रदान की गई थी, कहा था कि हमारे देश को ब्रिटिश राज की सबसे कीमती भेंट अंग्रेजी भाषा और आधुनिक शिक्षा प्रणाली थी। अंगेज़ी के आज कितने भी लाभ गिनाएँ जाएँ, वह आधुनिक युगबोध की भाषा हों, दुनिया के एक बड़े भाग के लिए ज्ञान का वातायन हो पर इस देश के आर्थिक विकास के लिए कोई सही निदान नहीं है। यदि इसका उपयोग दम्भ, वर्ग-वैषम्य और दूसरों पर बड़प्पन जताने के उद्देश्य से किया जाए तो यह निश्चित रूप से देश को जोड़ती कम, तोड़ती अधिक है।

ए-1002 पंचशील हाईट्स
महावीर नगर, कान्दिवली (प),
मुम्बई – 400067
दूरभाष : 28606451

☞ पृष्ठ 9 का शेष

अमर बलिदानी स्वामी ...

आगरा, मथुरा व भरतपुर क्षेत्र के पाँच लाख मलकाना राजपूत मुसलमान बन गए। आर्य समाज ने इन्हें शुद्ध करने का निर्णय लिया। इसके सभी अधिकार आप को दिए गए। आपके प्रयास से हिन्दू पण्डितों में भी सहानुभूति की भावना पैदा हुई। अन्त में सब पर गंगा जल ढिडक कर उन्हें वापिस अपने धर्म में लाया गया। आपने भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की। मालाबार में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों के विरूद्ध भी आप अड़ गए। मोपला विद्रोह में भी आपने महत्वपूर्ण कार्य किया।

आपने हिन्दू संगठन का नाद बजाया, हिन्दू रक्षार्थ महावीर दलों का आन्दोलन व अन्य अनेक सभाएँ गठित कीं। इन सभी कारणों से मुसलमान आपकी जान के प्यासे बन गए। आप सर्वादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान बने। पन्द्रह वर्ष तक गुरूकुल कांगडी के अधिष्ठाता रहे। मथुरा में महर्षि स्वामी दयानन्द शताब्दी, हिन्दू शुद्धि सभा तथा दलितोद्धार सभा के आप कार्यशील प्रधान रहे।

अत्यधिक परिश्रम के परिणाम स्वरूप जीवन के अन्तिम सात वर्ष अस्वस्थ रहते हुए भी लम्बी-लम्बी प्रचार यात्राएँ करने से पुराने रोग भी पुनः जाग उठे। ऐसी ही अवस्था में जब आप श्रद्धानन्द बाजार, देहली के भवन में रोग शैय्या पर पड़े थे तो 23 दिसम्बर को एक धर्मान्ध मुसलमान ने गोलियाँ मारकर आपको शहीद कर दिया।

इस प्रकार आजीवन आर्यसमाज के लिए तन, मन धन बलिदान करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने अपना सर्वस्व बलिदान देकर आर्यों में एक नया साहस व प्रेरणा दी, वेद प्रचार का मार्ग प्रशस्त किया।

104 शिप्रा आपार्टमेन्ट, कौशाम्बी,
गाजियाबाद

www.thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 18-19 /12/2013
रजिस्ट्रेशन नं. आर0 एन0 आई0 39/57

सभा प्रधान जी ने आर्य अनाथालय फिरोज़पुर छावनी में नव निर्मित गौशाला का उद्घाटन किया

श्रीमति एवं मान्य श्री पूनमसूरी, प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कालेज प्रबंधकर्त्री सीमिति, नई दिल्ली, के करकमलों द्वारा आर्य अनाथालय में गौशाला के नव निर्मित भवन का उद्घाटन मंत्रोच्चारण एवं पुष्प वर्षा पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डी.ए.वी. कालेज् कमेटी नई दिल्ली के महासचिव श्रीमति एवं मान्य श्री आर. एस. शर्मा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, के सहमंत्री श्री सतपालआर्य श्री एच.आर.गंधार तथा श्री विजय शर्मा (आर.डी.) विशेष रूप से उपस्थित थे। पं.सतीश शर्मा एडवोकेट, श्री पवन शर्मा आदि अनेकों गणमान्य जनों सहित डॉ. सतनाम कौर प्रबंधक ने अपने सहयोगी कार्यकर्ताओं के साथ पुष्प वर्षा की और बताया कि यह गौशाला भवन श्रीमान् प्रधानजी के आशीर्वाद, प्रेरणा और मार्गदर्शन का ही सुपरिणाम है।

इस अवसर पर उन्होंने एवं महासविच श्री शर्मा जी ने गौशाला भवन का उद्घाटन कर गऊओं को चारा आटा आदि खिलाया। समारोह मैं फ़िरोजपुर, बढिण्डा, फ़ाजिल्का, पटियाला, अमृतसर, मलोट,जलालाबाद आदि स्थानों के डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के प्रिंसीपल, स्थानीय डी.ए.वी. संस्थाओं के प्रिंसीपल, गणमान्य लोगों सहित, संस्था के कार्यकर्ता, विद्यालय के स्टॉफ सदस्य एवं बच्चे तथा आश्रम के बच्चे प्रसन्नतापूर्वक उपस्थित थे।

हंसराज स्कूल पंचकूला ने चलाया पर्यावरण शुद्धि अभियान

आर्य समाज महात्मा हंसराज पब्लिक स्कूल पंचकूला की पहल पर हवन आयोजनों की तीसरी कड़ी सेक्टर–12, पंचकूला के मकान नंबर 72 के सामने पार्क में दिनांक 23–11–2013 को आयोजित हुई। दरअसल, वातावरण में फैलते प्रदूषण के मद्देनजर पर्यावरण की शुद्धि के लिए स्कूल की प्राचार्या जया भारद्वाज ने प्रण लिया है कि वे हर महीने पंचकूला के विभिन्न सेक्टरों में हवन करेंगे, क्योंकि हवन ही वातावरण की शुद्धि का सर्वोत्तम साधन है इसलिए हमारे पूर्वज भी प्रतिदिन प्रातः व सांय में हवन करते थे।

सेक्टर–12 में आयोजित यज्ञ में बड़ी संख्या में बच्चों, अभिभावकों और सेक्टर–12 के बाशिंदों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। पंजाब के पूर्व राजपाल कर्नल छिब्बड़ ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। हवन के मुख्य वक्ता नरेंद्र आहूजा 'विवेक'–

सहायता राज्य औषधि नियंत्रक, हरियाणा ने अपने संबोधन में कहा कि बच्चों में अच्छे संस्कार विकसित करने को प्रयत्नशील रहना चाहिए और उन्हें बेहतर मनुष्य बनने की दिशा में लगाना चाहिए ताकि वे आगे चलकर समाज का उद्धार कर पाएं। इस मौके पर स्कूल प्राचार्या जया भारद्वाज ने सभी उपस्थित भद्रजनों का धन्यवाद किया जिन्होंने यज्ञ में पहुंचकर आयोजन को सफल बनाया।

एम.डी.डी.ए.वी. अम्बाला शहर में हुई वैदिक गीत प्रतियोगिता

मुरलीधर डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरीपब्लिकस्कूलअम्बाला द्वारा प्रति ऋषि ऋषि निर्वाण उत्सव पर अंतः विद्यालय प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। इसी परम्परा में इस वर्ष वैदिक गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्यातिथि अंबाला क्षेत्र के क्षेत्रीय निर्देशक प्रो. यज्ञदंत जिज्ञासु का स्कूल में पहुंचने पर प्रिंसिपल डॉ. आर.आर सूरी ने स्वागत किया। स्कूल प्रबंधक डॉ. वी के कोहली, प्रिंसिपल, सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षण कालेज अंबाला शहर ने भी मुख्यातिथि का स्वागत किया। इस अवसर पर प्रिंसिपल जे.एस. नैन प्रधान, आर्य समाज डी.ए.वी. शिक्षण कालेज भी उपस्थित थे। प्रतियोगिता में विभिन्न डी.ए.वी. स्कूलों की सात टीमों ने ईश भजन प्रस्तुत किये।

अपने अध्यक्षीय भाषण में मुख्यातिथि ने महर्षि दयानंद के जीवन के प्रेरक प्रसंग बताते हुए इन प्रतियोगिताओं के आयोजन का उद्देश्य स्पष्ट किया। उन्होंने विद्यार्थियों को महर्षि दयानंद के जीवन से प्रेरणा लेकर जीवनयापन करने का आह्वान किया।

श्री जे.एस. नैन ने अपने धन्यवाद प्रस्ताव में स्वामी दयानंद को अपने यग का महान सुधारक बताया तथा वर्तमान में उस यग प्रवर्तक के विचारों की आवश्यकता पर बल दिया। प्रतियोगिता में मुरलीधर डी.ए.वी. पब्लिक सीनियर सकेंडरी स्कूल अंबाला शहर प्रथम रहा। इसी प्रकार मेजर आर.एन. कपूर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल अंबाला छावनी दूसरे, अनिल कुमार डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल ईस्माइलाबाद तीसरे स्थान पर रहा। सोहन लाल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल अंम्बाला शहर ने सांत्वना पुरस्कार हासिल किया।

बाबू वृष भान डी.ए.वी. मूनक (पंजाब) में लगा रक्तदान शिविर

बाबू बृष भान डी.ए.वी. सी.सै. पब्लिक स्कूल मूनक (पंजाब) में एक स्वैच्छिक रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारम्भ वैदिक हवन यज्ञ से हुआ, जिसमें मुख्यातिथि श्री भीम सेन गर्ग (प्रधान, नगर पंचायत, मूनक), विद्यालय के प्राचार्य श्री संजीव शर्मा जी एवं अन्य अध्यापकों ने भाग लिया।

शिविर का उद्घाटन सरदार गुरमेल सिंह डी.एस.पी. मूनक एवं श्री भीम सेन जी ने संयुक्त रूप में किया। राजिंद्रा मैडीकल कॉलेज के 13 सदस्यों के एक दल ने शिविर का कार्यभार सुचारू रूप से संभाला। इसमें कुल 151 ईकाइयाँ रक्त एकत्र हुआ।

विद्यालय के आचार्य श्री शर्मा ने शिविर के सफल आयोजन में छात्रों, उनके अभिभावकों, अध्यापकगण एवं स्थानीय लोगों को रक्त का अमूल्य दान देने पर बहुत–बहुत धन्यवाद कहा।

मुद्रक व प्रकाशक – **श्री प्रबोध महाजन,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**